ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

मार्गशीर्ष-पौष, संवत् नानकशाही ५४१
दिसंबर 2009 वर्ष ३ अंक ४

संपादक *सहायक संपादक*
सिमरजीत सिंह सुरिंदर सिंह निमाणा
एम. ए, एम. एम. सी. *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303**
संपादन विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

पत्रिका प्राप्त न होने पर तथा चंदे आदि सम्बंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. 98886-38618 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सुोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज माझ राग के बारह माहा की इस पावन पउड़ी में पौष मास की ऋतु की पृष्ठभमि में दंपत्ति जीवन के संकेतों के प्रसंग में जीव रूपी स्त्री को पति परमात्मा की खुशियां प्राप्त करने वाला उसके दर-घर का गुरमति मार्ग दर्शाते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि पौष के अत्यंत कठोर एवं निष्ठुर शीत के महीने में भी उस जीव-स्त्री को शीत के कारण वनस्पति पर एकत्रित हुआ जल कुछ नहीं कहता अर्थात् वह जीव-स्त्री अति सांसारिकता और इसमें विद्यमान विषय-विकारों के पाले से बची रहती है जिसको उसका प्रभु-पति गले मिला हुआ है अर्थात् जिसने अपने हृदय में उसकी पावन स्मृति को सकुशलता के साथ संभाल रखा है। ऐसी जीव-स्त्री का मन मालिक के चरण-कमलों के साथ बंधा होता है और उसका एक-एक श्वास उसके दीदार की तीव्र इच्छा में ही लगा होता है। उस जीव-स्त्री को निर्धनों को पालने वाले मालिक राजा की सेवा का ही सहारा एवं लाभ होता है। प्रभु-पति की सेवा में लगी हुई जीव-स्त्री को विषय-विकार दुखित नहीं करते क्योंकि वह तो अपना मनुष्य-जन्म रूपी अवसर अच्छे संगियों के साथ मालिक के गुण गायन करने में ही सफल करती है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि पौष के महीने में जीव-स्त्री अपने शरीर के रूपाकार के मूल स्रोत प्रभु से उसके साथ सच्चा प्यार करके एकमन एकचित्त हो जाती है। अध्यात्म के स्रोत प्रभु द्वारा ऐसी नेक स्त्री का इस प्रकार हाथ पकड़ा हुआ होता है कि वह उससे पुन: बिछुड़े ही न। ऐसा परमात्मा जिसका स्वरूप मानव-मात्र की पहुंच या क्षमता से ऊपर है, मैं तो लाख बार कुर्बान चली जाऊं! सतिगुरु जी कहते हैं कि जब जीव-स्त्री उस मालिक के द्वार पर आ पड़ती है अथवा सभी सांसारिक सहारों को भुला कर मात्र प्रभु का ही सहारा चाहने लगती है। वह परमात्मा ऐसी दया-दृष्टि वाला है कि तब उसको उसकी इज्जत रखनी ही होती है। वह परमात्मा वेपरवाह भी है। वह पौष महीने में जिस जीव-स्त्री पर बख्शिश करता है उसका यह महीना सुहावना हो जाता है और यहां-वहां के सभी सुख उसको मिल जाते हैं।

आओ! दिसंबर माह के शहीदी साकों को स्मरण करते हुए गुरु के सच्चे सिक्ख होने का संकल्प लें!

सभी सिक्ख जिन्होंने कूड़ की शक्तियों के विरुद्ध युद्ध-क्षेत्र में जूझते हुए शहीदियां पाईं या सिक्ख धर्म के मूल सिद्धांतों को सम्मुख रखते हुए अत्याचारी शासन एवं प्रशासन के हाथों अकथनीय और न सहनयोग्य कष्ट सहन करते हुए अपनी जानें न्यौछावर कीं, वे सभी बहुत ही सम्माननीय हैं। उस समय से लेकर आज तक समस्त सिक्ख पंथ उन सभी को सच्चे हृदय की संवेदना के स्तर पर याद करता आ रहा है और अपने वर्तमान जीवन में सिक्खी धर्म को हर सूरते-हाल में कायम रखने के लिए प्रेरणा भी लेता आ रहा है। इनमें गुरु नानक पातशाह द्वारा स्थापित सिक्ख धर्म को खालसा पंथ के स्तर पर पहुंचाने वाले दशमेश पिता साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के चारों साहिबजादों की शहीदियां अनोखा विस्मादी वृत्तांत प्रस्तुत करती हैं। चमकौर के युद्ध में जिन चालीस सिंघों ने अनगिणत सेनाओं का टाकरा करके शहीदियां प्राप्त कीं उनमें गुरु जी के दो बड़े साहिबजादे--बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी भी शामिल थे। गुरु जी ने दोनों साहिबजादों को चमकौर की गढ़ी में से न केवल अपने हाथों से युद्ध-क्षेत्र में जूझने हेतु तैयार करके और अपना आशीर्वाद देकर भेजा बल्कि उनको वैरी के साथ जूझते तथा शहीदियां प्राप्त करते हुए अपनी आंखों से देखा और इस पर संतुष्टि का भी प्रगटावा भी किया कि साहिबजादे सिक्ख पंथ/खालसा पंथ का अभिन्न अंग सिद्ध हुए हैं, पूर्ण जांनिसारी की भावना से वैरी के साथ जूझे हैं। गुरु महाराज ने इसी युद्ध के विभिन्न मोड़ों पर कुछ एक अन्य ढंगों से भी सिक्ख पंथ के प्रतिनिधियों को स्पष्ट किया कि उनकी दृष्टि में साहिबजादे भी सिक्ख पंथ अथवा खालसा पंथ का ही अंग हैं। गुरु जी ने यहां तक भी कथन किया कि तुम सभी सिक्ख अथवा खालसा मेरे साहिबजादे ही तो हो। इसी समदृष्टि के कारण ही तो गुरु जी ने इतने बड़े मुगल राज्य के विरुद्ध इतने जोरदार संघर्ष को सरअंजाम दिया था।

छोटे साहिबजादे--बाबा जोरावर सिंघ जी और बाबा फतेह सिंघ जी का शहीदी वृत्तांत जहां सर्वोच्च साहस तथा धर्म पर दृढ़ रहने की भावना का शिखर उदाहरण है वहां यह अत्यंत करुणामयी शहीदी साका भी है, क्योंकि छोटे साहिबजादों की आयु अभी बहुत ही छोटी थी और निष्ठुर शासकों-प्रशासकों ने उनकी अल्प आयु का बिलकुल ही ख्याल न करते हुए अत्यंत कठोरता, निष्ठुरता और घोर अमानवीय मजहबी कट्टरता का प्रदर्शन किया, दोनों नन्हें गुरु-लालों को अत्यधिक शारीरिक-मानसिक-आत्मिक यातनाएं देकर शहीद किया गया। ये दोनों शहीदियां तत्कालीन अत्याचारी शासन-प्रशासन की पराजय और असफलता तथा सिक्ख धर्म की आत्मिक विजय का सबसे उज्जवल उदाहरण मानी गई हैं। नन्हें साहिबजादों को धर्म पर अडोल, अडिग

रहने की प्रेरणा देने वाली इनकी दादी-मां माता गुजरी जी का अत्यंत कठिन परिस्थितियों में अद्वितीय योगदान था। नन्हें-मुन्ने सिक्खी धर्म पर हर सूरते-हाल में कायम रह पायें, ठंडे बुर्ज में कैद कर रखे गए माता गुजरी जी की सबसे बड़ी चिंता यही थी। दशमेश जी ने बड़े साहिबजादों को युद्ध-क्षेत्र में जूझते हुए प्राण न्योछावर करते हुए देखकर अकाल पुरख वाहिगुरु का शुक्राना प्रकट किया था कि साहिबजादे धर्म की कसौटी पर खरे सिद्ध हुए हैं। नन्हें-मुन्ने पौत्रों को किसी भी लालच या भय में न आकर सिक्ख धर्म पर कायम रहते हुए जानें न्योछावर कर देने पर माता गुजरी जी ने भी अकाल पुरख वाहिगुरु का धन्यवाद व्यक्त किया था। माता गुजरी जी ने इसी शहीदी साके में स्वयं भी अपनी जिंदगी को न्योछावर किया। इस शहीदी साके का वृत्तांत नूरे माही से सुन कर दशमेश पिता ने कांसी का एक पौधा तीर की नोक से उखाड़ कर वचन किया था कि जालिम राज्य की जड़ उखड़ गई क्योंकि यह जुल्म की इंतहा थी। इतना जुल्मी राज्य किसी भी सूरत में अस्तित्व में रह ही नहीं सकता था। यह कुदरत का नियम भी है।

चमकौर साहिब और सरहिंद अथवा फतहगढ़ साहिब में घटित हुए इन साकों की स्मृति सिक्ख पंथ के मन-मस्तक में बहुत गहरे रूप से विद्यमान है। जब भी हर वर्ष दिसंबर महीने के इन शहीदी साकों के दिवस आते हैं सिक्ख मानसिकता करुणामयी संवेदना से भर जाती है। ऐसी संवेदना हमारे संग-साथ रही है और सदैव रहेगी। इसके साथ-साथ सिक्ख पंथ को इस करुणामयी संवेदना में से अपने विलक्षण सिक्ख धर्म और नये-निराले रूप में दशमेश पिता के द्वारा स्थापित खालसा पंथ के प्रति पूर्ण समर्पण और दृढ़ता की भावना को विकसित करना भी बहुत जरूरी तथा महत्वपूर्ण हैं। इस प्रसंग में हमें वर्तमान कौमी स्थिति को सकारात्मक दिशा में बदलने के लिए सभी यथा-संभव प्रयत्न करने की दिशा में क्रियाशील होना होगा। अन्य भी कई कौमी समस्याएं आज के मोड़ पर सिक्ख पंथ अथवा खालसा पंथ को दरपेश हैं, उन सभी के समाधान की ओर हम सभी को अपने-अपने स्तर पर और सामूहिक पंथक स्तर पर हर संभव प्रयत्न करने चाहिए। सभी कौमी अथवा पंथक समस्याओं में पतितपन और नशाखोरी की घुसपैठ सबसे अधिक ध्यान देने योग्य अथवा प्रमुखता सहित हल करने वाली है।

पावन गुरबाणी के निर्मल उपदेशों को अपनाते-कमाते हुए इस भ्रांति को दूर करना होगा कि शायद हम गुरु की मोहर केशों/दाड़ी-मूछों को कत्ल कराकर या बिगाड़ कर भी सिक्ख पंथ का ही अंग बने रह सकते हैं। दूसरी भ्रांति यह है कि क्या शराब तथा अन्य नशों का सेवन करके, इनका व्यापार करके भी हम सिक्ख कहलवा सकते हैं? उत्तर 'न' में होगा। ये दोनों भ्रांतियां हम सिक्ख कहलवाने वाले यदि इन ऐतिहासिक शहीदी साकों को स्मरण करते हुए छोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प ले सकें तो यह चारों साहिबजादों, माता गुजरी जी तथा चमकौर के समूह सिक्ख शहीदों के प्रति एक व्यवहारिक प्रकार की श्रद्धांजलि होगी!

अद्वितीय शूरवीर एवं अमर शहीद बड़े साहिबजादे

-स. सुरजीत सिंघ*

सिक्ख धर्म का देश-भक्ति-पूर्ण एवं ओजस्वी इतिहास रहा है जिसमें शौर्य, त्याग, बलिदान, सेवा, विनम्रता, भक्ति की अनूठी एवं अखंड परंपरा रही है और इतिहास का यही स्वर्णिम अध्याय सदियों से राष्ट्र की स्वतंत्रता, समानता, एकता के लिए अति प्रेरणास्पद एवं प्रासंगिक रहा है। खालसा पंथ के सभी गुरु साहिबान ने समय-समय पर आवश्यकतानुसार सत्य-धर्म, मानव-धर्म, जीवन-धर्म एवं देश-कौम की रक्षार्थ ओजस्वी बलिदान एवं अमूल्य योगदान दिया है जो कि सर्वत्र नयी जागृति एवं आदर्श प्रेरणा का सूत्रधार है।

विश्व इतिहास में धर्म एवं मानवीय मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धांतों की रक्षार्थ प्राणों की आहुति देने वालों में सरबंसदानी, महावीर, संत सिपाही एवं दिव्य युगपुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुपुत्रों का अद्वितीय एवं सर्वोच्च स्थान रहा है जिन्होंने मानवीय धर्म एवं वैचारिक स्वतंत्रता के लिए अपना महान बलिदान दिया।

'खालसा' शब्द 'खालिस' से बना है, जिसका तात्पर्य है विशुद्ध, निर्मल अथवा बिना मिलावट का, क्योंकि खालसा अपने आप में विशुद्ध और निर्मल है, जिसका सीधा सम्बंध अकाल पुरख ईश्वर से है, जो हर समय, हर स्थान पर और हर एक वस्तु में विद्यमान है। ईश्वर एक है जो जन्म-मृत्यु से परे एवं रंग-रूप से अभेद है।

पौष माह की रात्रि की कड़कती सर्दी में श्री अनंदपुर साहिब (पंजाब) का किला छोड़कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सपरिवार एवं सिक्खों सहित तीव्र उफनती सरसा नदी पार कर रोपड़ की ओर कूच किया। सरसा नदी के अत्यंत तेज वेग के उफान के कारण गुरु जी का सारा परिवार एवं सिक्ख बिछुड़ गए और कुछ सरसा नदी की भेंट चढ़ गए। गुरु जी के साथ दो बड़े साहिबजादे बाबा अजीत सिंघ जी एवं बाबा जुझार सिंघ जी और कुछ खालसा सैनिक शेष रहे, जो चमकौर साहिब पहुंचे और वहां के बाशिंदों ने गुरु जी का आदर-सत्कार कर पलक-पावड़े बिछा दिए। चमकौर के बीचो बीच स्थित एक विशाल हवेली को गुरु जी ने किले (गढ़ी) का रूप देकर मुठ्ठी भर सिक्खों के साथ चारों तरफ मोर्चाबंदी कर दी। उधर लाखों की गिनती में गुरु जी का पीछा कर रही मुगल सेना शीघ्र ही चमकौर की गढ़ी के पास आ पहुंची और गढ़ी को चारों तरफ से घेरा डाल दिया।

गुरु जी की खालसा फौज एवं मुगल सेना के मध्य घमासान युद्ध छिड़ गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बड़े सपुत्र बाबा अजीत सिंघ जी बड़े निपुण सैनिक, तलवार के धनी, धनूरधर, श्रेष्ठ घुड़सवार और अथक वीर योद्धा जरनैल थे। अपने गुरु-पिता के पास आकर रणभूमि में जाने की आज्ञा मांगते हुए निवेदन किया कि वीर माताएं जिस क्षण के लिए अपने वीर पुत्रों को जन्म देती हैं वह क्षण आ गया है, इसलिए अब मुझे मातृभूमि का ऋण चुकाने

*५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)

का अवसर दीजिए। इस पर तुरंत ही गुरु जी ने सहर्ष बाबा अजीत सिंघ जी को धर्म और मानवता की रक्षार्थ रणभूमि में जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। अब बाबा अजीत सिंघ घोड़े पर सवार हो सम्पूर्ण शस्त्रों से लैस हो बिजली की तरह चमकते-गरजते हुए मुठ्ठी भर साथियों के साथ रणभूमि में कूद पड़े। गुरु-सपुत्र असंख्य शत्रुओं को अपनी तलवार और खंडे व तीरकमान की भेंट चढ़ाने लग गये। चमकौर की रणभूमि लाशों के ढेर से ढकती जा रही थी, जहां हर तरफ रक्त ही रक्त फैला हुआ नज़र आ रहा था। अपनी बर्बादी देखकर मुगल सेनिकों द्वारा गुरु-सपुत्र को चारों तरफ से घेर कर एक साथ अचानक आक्रमण कर दिया। शरीर पर असंख्य घाव हो जाने और अधिक रक्त बह जाने के कारण खून की आखिरी बूंद तक लड़ते-लड़ते बाबा अजीत सिंघ जी अपने साथियों सहित रणभूमि में शहीद हो गए और अपना प्रण पूरा किया : *"पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥"*

रणभूमि की वीरता का दृश्य गुरु जी चमकौर की गढ़ी के ऊपर खड़े-खड़े देखकर प्रफुल्लित हो रहे थे। गुरु-सपुत्र और सिक्खों की वीरता तथा श्रेष्ठ बलिदान के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया कि तेरी अमानत तुझे अर्पित हो गई है। धन्य हैं गुरु-पिता, जिनका सरबंस देश-कौम-धर्म और मानवता तथा विश्व-बन्धुत्व के लिए बलिदान हुआ अर्थात् पूर्वज भी शहीद, माता-पिता भी शहीद और चारों पुत्र भी शहीद। भारत की पवित्र भूमि धन्य हो गई जहां बलिदानों की ऐसी अमर गाथाएं लिखी जा रही हैं।

बाबा जुझार सिंघ जी अपने बड़े भाई की भांति ही निपुण सैनिक, जरनैल, तलवार के धनी, धनूरधर और श्रेष्ठ घुड़सवार थे। अब उनके भुजदंड फड़कने लगे। बड़े भाई की तरह ही गुरु-पिता से युद्ध में जाने की आज्ञा पाकर, घोड़े पर सवार हो एवं शस्त्रों से सुसज्जित हो सैनिक सिक्खों के साथ उत्साहपूर्वक बिजली की तरह कड़कते-चमकते रणभूमि में कूद पड़े। जिधर उनकी तलवार घूमती शत्रुओं का सफाया ही होता चला जाता था। अद्‌भुत विलक्षण वीरता और पराक्रम को देख मुगल सैनिक भी दंग रह गए। चारों तरफ से घिर जाने और लड़ते-लड़ते गुरु-सपुत्र का चाहे सारा शरीर ही घावों से छलनी-छलनी हो गया किन्तु फिर भी उनकी तलवार अपना अद्‌भुत जौहर दिखाती ही रही। लाशों का ढेर बिछाने के उपरांत खून की अंतिम बूंद तक जूझते-जूझते बाबा जुझार सिंघ जी ने भी "सति श्री अकाल" का जयघोष कर मातृभूमि और मानवता की रक्षार्थ अपना जीवन बलिदान कर हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो गये। यह महान साका ८ पौष सं. १७६१ को घटित हुआ। ऐसे महान अमर वीर शहीदों पर, जिन्होंने राष्ट्रीय आदर्शों, मानवीय धर्म-सिद्धांतों एवं वैचारिक स्वतंत्रता की रक्षार्थ अपने प्राणों की आहुति दी, देश-कौम को उन पर गर्व है और देश-कौम तथा समस्त मानवता सदैव ही उनकी ऋणी है।

छोटी आयु के शहीद

-स. जसबीर सिंघ*

जो मनुष्य लगातार चुनौती देने पर भी अपने आदर्श पर दृढ़ता से डटा हुआ अपने प्राणों की आहुति दे दे अथवा कुर्बान हो जाए, किन्तु अपनी धारणा में परिवर्तन न लाए, ऐसे बलिदानी पुरुष को 'शहीद' कहते हैं।

यह वीर गाथा उन गुरु-लालों की है जिनके शहादत के समय अभी दूध के दांत भी नहीं गिरे थे। उनके पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तत्कालीन सम्राट औरंगजेब से लम्बे समय से लोहा ले रहे थे। सम्राट ने लंबे युद्ध से परेशान होकर विवशता में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को एक विशेष संधि का मुसौदा भेजा जिसमें उसने स्वयं पवित्र कुरान की शपथ लेकर गुरदेव से आग्रह किया कि वे संधि-पत्र की इबारत की विशेष धाराओं के अनुरूप देश के किसी भी क्षेत्र में बिना भय के विचरण कर सकते हैं; उनकी जान-माल की सलामती (सुरक्षा) की जमानत दी जायेगी ब-शर्ते कि वे एक बार हमारी आन-बान बनाये रखने के लिए अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दें। इस बीच हमारा सैन्य बल आपको सकुशल जाने देगा और किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंचाएगा।

गुरदेव को औरंगजेब की खाई कसमों पर बिलकुल भी भरोसा न था। वे जानते थे कि राजनीतिज्ञ छल-कपटी होते हैं। अत: वे बहुत सतर्क थे। किन्तु किले में रसद के अभाव में सिक्ख सैनिकों की ओर से भी गुरदेव पर भारी दबाव बना हुआ था कि वे समय का लाभ उठाकर किले को त्याग दें। इस प्रकार संधि के अनुच्छेद-दो के अनुसार गुरदेव को किला त्यागने पर प्रशासन की ओर से सुरक्षा प्रदान की जानी थी, जिस पर सम्राट के अतिरिक्त वरिष्ठ सैनिक अधिकारियों के हस्ताक्षर भी थे।

गुरदेव ने सावधानी से कार्य करते हुए शीत ऋतु की सबसे छोटी रात्रि के मध्य २० दिसंबर, १७०४ को अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दिया। उस समय घनघोर वर्षा हो रही थी और सर्दी पूरे यौवन पर थी।

अल्प आयु के शहीद

रात अंधेरी और सरसा नदी की बाढ़ के कारण श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का परिवार काफिले से बिछुड़ गया। माता गुजरी जी के साथ उनके दो छोटे पोते थे। वे अपने रसोइये गंगू के साथ आगे बढ़ती हुई रास्ता भटक गईं। उन्हें गंगू ने सुझाव दिया कि यदि आप मेरे साथ मेरे गांव सहेड़ी चलें तो यह संकट का समय सहज ही टल जाएगा। माता जी ने स्वीकृति दे दी और सहेड़ी गांव में गंगू रसोइये के घर पहुंच गये। माता गुजरी जी के पास एक थैली थी, जिसमें कुछ स्वर्ण मुद्राएं थीं, जिन पर गंगू की दृष्टि पड़ गई। गंगू की नीयत खराब हो गई। उसने रात में सोते हुए माता गुजरी जी के तकिये के नीचे से स्वर्ण मुद्राओं की थैली चुपके-से चुरा ली और प्रात: काल होने पर छत पर चढ़ कर चोरी हो जाने का शोर मचाने लगा। माता जी ने उसे शांत कराने का प्रयास किया किन्तु गंगू तो चोर-चतुर का नाटक कर रहा था। उन्हीं दिनों सरहिंद के नवाब वजीर खान

***C/o** *सुंदर ग्लास एण्ड प्लाईवुड्स, २३५, २५२, सेक्टर ३४-सी, चंडीगढ़।*

ने गांव-गांव में ढिंढोरा पिटवा दिया कि गुरदेव व उनके परिवार को कोई पनाह न दे। पनाह देने वालों को सख्त सज़ा दी जायेगी और उन्हें पकड़वाने वालों को इनाम दिया जाएगा।

गंगू पहले तो यह याद कर भयभीत हो गया कि मैं खामख्वाह मुसीबत में फंस जाऊंगा। फिर उसने सोचा कि यदि माता जी व साहिबजादों को पकड़वा दूं तो एक तो सूबे के कोप से बच जाऊंगा तथा दूसरा इनाम भी प्राप्त करूंगा। गंगू नमक-हराम निकला। उसने मोरिंडा की कोतवाली में कोतवाल को सूचना देकर इनाम के लालच में बच्चों को पकड़वा दिया।

थानेदार ने एक बैलगाड़ी में माता जी तथा साहिबजादों को सरहिंद के नवाब वजीर खान के पास कड़े पहरे में भिजवा दिया। वहां उन्हें सर्द ऋतु की रात में ठंडे बुर्ज में बंद कर दिया गया और उनके लिए भोजन की व्यवस्था तक नहीं की गई। दूसरी सुबह एक दूधिया मोती राम ने माता जी तथा साहिबजादों को दूध पिलाया।

नवाब वजीर खान जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जीवित पकड़ने के लिए सात माह तक सेना सहित अनंदपुर साहिब के आसपास भटकता रहा, परन्तु निराश होकर वापस लौट आया था, उसने जब गुरदेव के मासूम बच्चों तथा बुजुर्ग माता को अपने कैदियों के रूप में देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अगली सुबह साहिबजादों को कचहरी में पेश करने के लिए फरमान जारी कर दिया।

दिसंबर की बर्फ जैसी ठंडी रात को, ठंडे बुर्ज में बैठी माता गुजरी जी अपने नन्हें-नन्हें दोनों पोतों को गले से लगाकर गर्माती और चूम-चूम कर सुलाने का प्रयत्न करती रही।

माता जी ने भोर होते ही मासूमों को जगाया तथा स्नेह से तैयार किया। दादी पोतों से कहने लगी, "पता है! तुम उस गोबिंद सिंघ 'शेर-गुरु' के बच्चे हो जिसने अत्याचारियों से कभी हार नहीं मानी। धर्म की आन तथा शान के बदले जिसने अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया और इससे पहले अपने पिता को भी शहीदी देने के लिए कहा था। देखना, कहीं वजीर खान द्वारा दिये गये लालच अथवा भय के कारण धर्म में कमजोरी न दिखा देना! अपने पिता व धर्म की शान को जान न्यौछावर करके भी कायम रखना।"

दादी, पोतों को यह सब कुछ समझा ही रही थी कि वजीर खान के सिपाही दोनों साहिबजादों को कचहरी में ले जाने के लिए आ गये। जाते हुए दादी मां ने फिर साहिबजादों को चूमा और पीठ पर हाथ फेरते हुए उन्हें सिपाहियों के संग भेज दिया।

कचहरी का बड़ा दरवाजा बंद था। साहिबजादों को खिड़की से अंदर प्रवेश करने को कहा गया। रास्ते में उन्हें बार-बार कहा गया था कि कचहरी में घुसते ही नवाब के समक्ष शीश झुकाना है। जो सिपाही साथ जा रहे थे वे पहले सिर झुका कर खिड़की के द्वारा अंदर दाखिल हुए। उनके पीछे साहिबजादे थे। उन्होंने खिड़की में पहले पैर आगे किये और फिर सिर निकाला। थानेदार ने बच्चों को समझाया कि वे नवाब के दरबार में झुककर सलाम करें, किन्तु साहिबजादों ने इसके विपरीत उत्तर दिया और कहा--"यह सिर हमने अपने पिता गुरु गोबिंद सिंघ जी के हवाले किया हुआ है, इसलिए इसको कहीं और झुकाने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।"

कचहरी में नवाब वजीर खान के साथ बड़े-बड़े दरबारी बैठे हुए थे। दरबार में प्रवेश करते ही साहिबजादा जोरावर सिंघ तथा साहिबजादा फतेह सिंघ दोनों भाइयों ने गर्ज कर जैकारा

लगाया--"वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी फतेह।" नवाब तथा दरबारी लोग बच्चों का साहस देखकर आश्चर्य में पड़ गये। एक दरबारी सुच्चा नंद ने बच्चों से कहा--"ऐ बच्चो! नवाब साहिब को झुककर सलाम करो।" साहिबजादों ने उत्तर दिया, "हम गुरु तथा ईश्वर के अतिरिक्त किसी को भी शीश नहीं झुकाते, यही शिक्षा हमें प्राप्त हुई है।"

नवाब वजीर खान कहने लगा--"तुम्हारा पिता तथा तुम्हारे दोनों बड़े भाई युद्ध में मार दिये गये हैं। तुम्हारी तो किस्मत अच्छी है जो मेरे दरबार में जीवित पहुंच गये हो। इस्लाम धर्म को कबूल कर लो तो तुम्हें रहने को महल, खाने को भांति-भांति के पकवान तथा पहनने को रेशमी वस्त्र मिलेंगे। तुम्हारी सेवा में हर समय सेवक रहेंगे। बड़े हो जाओगे तो बड़े-बड़े मुसलमान जरनैलों की सुंदर बेटियों से तुम्हारी शादी कर दी जायेगी। तुम्हें सिक्खी से क्या लेना है? सिक्ख धर्म को हमने जड़ से उखाड़ देना है। हम सिक्ख नाम की किसी वस्तु को रहने ही नहीं देंगे। यदि मुसलमान बनना स्वीकार नहीं करोगे तो कष्ट दे-दे कर मार दिये जाओगे ताकि भविष्य में कोई सिक्ख बनने का साहस न कर सके।"

नवाब बोलता गया। पहले तो साहिबजादे उसकी मूर्खता पर मुस्कराते रहे, फिर नवाब द्वारा डराने पर उनके चेहरे लाल हो गये। इस बार साहिबजादा जोरावर सिंघ दहाड़ उठा--"हमारे पिता अमर हैं। उन्हें मारने वाला कोई जन्मा ही नहीं। उन पर अकाल पुरख का हाथ है। दूसरी बात रही इस्लाम कबूल करने की, तो हमें सिक्खी जान से अधिक प्यारी है। दुनिया का कोई भी लालच व भय हमें सिक्खी से नहीं गिरा सकता। हम पिता गुरु गोबिंद सिंघ के शेर बच्चे हैं तथा उनकी भांति हम किसी से नहीं डरते। हम इस्लाम धर्म कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे। तुमने जो करना हो, कर लो। हमारे दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने शहीद होना तो स्वीकार कर लिया था परंतु धर्म से विचलित नहीं हुए थे। हम उसी दादा जी के पोते हैं। हम जीते-जी उनकी शान को आंच तक नहीं आने देंगे।"

सात वर्ष के साहिबजादा जोरावर सिंघ के मुंह से बहादुरों वाले ये शब्द सुनकर सारे दरबार में चुप्पी छा गई। नवाब वजीर खान भी साहिबजादों की बहादुरी से प्रभावित हुए बिना न रह सका। उसने काजी को साहिबजादों के बारे में फतवा (सजा) देने को कहा। काजी ने उत्तर दिया कि बच्चों के बारे में फतवा (दंड) नहीं सुनाया जा सकता। इस पर सुच्चानंद बोला उठा--"इतनी अल्प आयु में ये राज दरबार में इतनी आग उगल सकते हैं तो बड़े होकर तो हकूमत को ही आग लगा देंगे। ये बच्चे नहीं सांप हैं, सिर से पैर तक जहर से भरे हुए। एक गुरु गोबिंद सिंघ को ही वश में नहीं किया जा सका तो जब ये बड़े हो गये तो दो कदम आगे बढ़ जायेंगे। सांप को पैदा होते ही मार देना चाहिए। देखो, इनका हौसला! नवाब का अपमान करने से भी नहीं झिझके। इनका तो अभी से काम तमाम कर देना चाहिए।" नवाब ने बाकी दरबारियों की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा कि कोई और सुच्चा नंद की बात का समर्थन करता है अथवा नहीं, परन्तु सभी दरबारी मूर्तिवत खड़े रहे। किसी ने भी सुच्चा नंद की हां में हां नहीं मिलाई।

तब वजीर खान ने मलेरकोटला के नवाब से पूछा, "आपका क्या ख्याल है? आपका भाई और भतीजा भी तो गुरु के हाथों चमकौर में मारे गये हैं। लो अब शुभ अवसर आ गया है बदला लेने का। इन बच्चों को मैं आपके हवाले

करता हूं। इन्हें मृत्यु-दंड देकर आप अपने भाई-भतीजे का बदला ले सकते हो।"

मलेरकोटला का नवाब पठान-पुत्र था। उस शेरदिल पठान ने मासूम बच्चों से बदला लेने से साफ इंकार कर दिया और कहा, "इन बच्चों का क्या कसूर है? यदि बदला लेना ही है तो इनके बाप से लेना चाहिए। मेरा भाई और भतीजा गुरु गोबिंद सिंघ के साथ युद्ध करते हुए रणक्षेत्र में मारे गए। इन बच्चों को मारना मैं बुजदिली समझता हूं। अत: आप इन बेकसूर बच्चों को छोड़ दीजिए।" मलेरकोटला का नवाब शेर मोहम्मद खान चमकौर के युद्ध में वजीर खान के साथ ही वापिस आया था और वह अभी सरहिंद में ही था।

नवाब पर सुच्चा नंद द्वारा साहिबजादों के लिए दी गई सलाह का प्रभाव तो पड़ा पर वह साहिबजादों को मारने की बजाय इस्लाम में शामिल करने के हक में था। वह चाहता था कि इतिहास के पन्नों पर लिखा जाये कि गुरु गोबिंद सिंघ के साहिबजादों ने सिक्ख धर्म से इस्लाम को अच्छा समझा और मुसलमान बन गए। अपनी इस इच्छा की पूर्ति हेतु उसने गुस्से पर नियंत्रण कर लिया तथा कहने लगा, "बच्चो! जाओ अपनी दादी के पास। कल आकर मेरी बातों का सोचकर सही-सही उत्तर देना। दादी से भी सलाह कर लेना। हो सकता है तुम्हें प्यार करने वाली दादी तुम्हारी जान की रक्षा के लिए तुम्हारा इस्लाम में आना कबूल कर ले।"

साहिबजादे कुछ कहना चाहते थे परन्तु वजीर खान शीघ्र ही उठकर एक तरफ हो गया और सिपाही साहिबजादों को दादी मां की ओर लेकर चल दिए।

साहिबजादों को पूर्ण सिक्खी स्वरूप में तथा चेहरों पर पूर्व की भांति जलाल देखकर दादी ने सुख की सांस ली। अकाल पुरख का दिल से धन्यवाद किया और बच्चों को बाहों में समेट लिया। काफी देर तक बच्चे दादी के आलिंगन में प्यार का आनंद लेते रहे। दादी ने आंखें खोलीं, कलाई ढीली की, तब तक सिपाही जा चुके थे।

अब माता गुजरी जी आहिस्ता-आहिस्ता पोतों से कचहरी में हुए वार्तालाप के बारे में पूछने लगी। साहिबजादे भी दादी मां को कचहरी में हुए वार्तालाप के बारे में बताने लगे। उन्होंने सुच्चा नंद की ओर से जलती पर तेल डालने के बारे में भी दादी मां को बताया।

दादी मां ने कहा, "शाबाश बच्चो! तुमने अपने पिता तथा दादा की शान को कायम रखा है। कल फिर तुम्हें कचहरी में और अधिक लालच तथा डरावे दिये जाएंगे। देखना, आज की भांति धर्म को जान से भी अधिक प्यारा समझना और ऐसे ही दृढ़ रहना। अगर कष्ट दिए जाएं तो अकाल पुरख का ध्यान करते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब और श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत को सामने लाने का प्रयास करना। तुम्हारे विदा होने के बाद मैं भी तुम्हारे सिक्खी-सिदक की परिपक्वता के लिए अकाल पुरख के समक्ष सिमरन में जुड़ कर अरदास करती रहूंगी।" यह कहते-कहते दादी मां साहिबजादों को अपने आलिंगन में लेकर सो गईं।

अगले दिन भी कचहरी में पहले जैसे ही सब कुछ हुआ। बड़े-बड़े लालच दिये गये तथा धमकाया गया। साहिबजादे धर्म से नहीं डोले। नवाब ने लालच देकर साहिबजादों को धर्म से फुसलाने का प्रयत्न किया। उसने कहा कि यदि वे इस्लाम स्वीकार कर लें तो उन्हें जागीरें दी जाएंगी, बड़े होकर शाही खानदान की शहजादियों के साथ विवाह कर दिया जाएगा। शाही खजाने के मुंह उनके लिए खोल दिए जाएंगे।

नवाब का ख्याल था कि भोली-भाली सूरत वाले ये बच्चे लालच में आ जाएंगे, पर वे तो गुरु गोबिंद सिंघ जी के लाल थे! उन्होंने किसी शर्त अथवा लालच में आकर इस्लाम स्वीकार करने से एकदम इंकार कर दिया।

अब नवाब धमकियों पर उतर आया। गुस्से में लाल-पीला होकर कहने लगा, "यदि इस्लाम कबूल न किया तो मौत के घाट उतार दिए जाओगे, फांसी चढ़ा दूंगा, जिन्दा दीवार में चिनवा दूंगा। बोलो, क्या मंजूर है, मौत या इस्लाम?"

साहिबजादा जोरावर सिंघ ने हल्की-सी मुस्कराहट होठों पर लाते हुए अपने भाई से कहा, "भाई! हमारे शहीद होने का अवसर आ गया है, ठीक उसी तरह जैसे दादा श्री गुरु तेग बहादर जी ने दिल्ली के चांदनी चौक में शहीदी पाई थी।"

साहिबजादा फतेह सिंघ ने कहा, "भाई जी! हमारे दादा जी ने शीश दिया पर धर्म नहीं छोड़ा। उनका उदाहरण हमारे सामने है। हमने खंडे का अमृतपान किया हुआ है। हमें मृत्यु से क्या भय? हम भी अपना शीश धर्म के लिए देकर धर्म को आंच न आने दें।"

साहिबजादा जोरावर सिंघ ने कहा, " हम गुरु गोबिंद सिंघ जैसी महान हस्ती के सपुत्र हैं। गुरु-घर की परंपरा है "सिर जावे तां जावे, पर सिक्खी सिदक न जावे।" हम धर्म-परिवर्तन की बात ठुकरा कर फांसी के तख्ते को चूमेंगे।"

जोश में आकर साहिबजादा फतेह सिंघ ने कहा, "सुन रे सूबेदार! हम हर सूरत में जान-बख्शी की तेरी पेशकश को ठुकराते हैं। हम अपना धर्म नहीं छोड़ेंगे। तू हमें दुनिया का लालच क्या देता है? हम तेरे झांसे में आने वाले नहीं। हमारे दादा जी को शहीद कर तुम लोगों ने एक अग्नि प्रज्वलित कर दी है, जिसमें तुम लोग स्वयं भस्म होकर रहोगे। हमारी शहीदी इस अग्नि को हवा देकर ज्वाला बना देगी।"

सुच्चा नंद ने नवाब को परामर्श दिया कि बच्चों की परीक्षा ली जानी चाहिए। अतः उनको अनेकों भांति-भांति के खिलौने दिये गये। बच्चों ने उन खिलौनों में से धनुष बाण, तलवार इत्यादि अस्त्र-शस्त्र रूप वाले खिलौने चुन लिए। जब उनसे पूछा गया कि इससे आप क्या करोगे तो उनका उत्तर था, युद्ध-अभ्यास करेंगे। साहिबजादों के चढ़दी कला के विचार सुनकर वजीर खान तथा काजी के मन में यह बात बैठ गई कि सुच्चा नंद ठीक ही कहता है कि सांप के बच्चे सांप ही होते हैं। वजीर खान ने काजी से परामर्श करने के पश्चात् उसको दोबारा फतवा देने को कहा। इस बार काजी ने कहा कि "बच्चे कसूरवार हैं, क्योंकि ये बगावत पर तुले हुए हैं। इनको जिंदा दीवार में चिन कर कत्ल कर देना चाहिए।"

कचहरी में बैठे मलेरकोटला के नवाब शेर मोहम्मद ने कहा, "नवाब साहब! इन बच्चों ने कोई कसूर नहीं किया। इनके पिता से बदला लेने की सजा इन्हें नहीं मिलनी चाहिए। इस्लाम की शरह अनुसार सजा उसी को मिलनी चाहिए जो कसूरवार हो, दूसरों को नहीं।"

काजी बोला, "शेर मोहम्मद! इस्लामी शरह को मैं तुमसे बेहतर जानता हूं। मैंने शरह के अनुसार ही सजा सुनाई है।"

तीसरे दिन साहिबजादों को कचहरी भेजते समय दादी मां की आंखों के सामने होने वाले कांड की तस्वीर बनती जा रही थी। दादी मां को निश्चय था कि आज का बिछोड़ा नन्हें पोतों से सदा के लिए बिछोड़ा बन जाएगा। परन्तु यकीन था माता गुजरी जी को कि मेरे मासूम पोते अपना जीवन कुर्बान करके भी धर्म की

रक्षा करेंगे। मासूम पोतों को जी भर कर प्यार किया, माथा चूमा, पीठ थपथपाई और विदा किया बावर्दी सिपाहियों के साथ, होनी से निपटने के लिये। दादी मां टिकटिकी लगा कर तब तक सुंदर साहिबजादों की ओर देखती रही जब तक वे आंखों से ओझल न हो गये।

माता गुजरी जी साहिबजादों को सिपाहियों के साथ भेज कर वापिस ठंडे बुर्ज में अकाल पुरख में ध्यान लगा कर प्रार्थना करने लगी, "हे अकाल पुरख! बच्चों के सिक्खी-सिदक को कायम रखने में सहायी होना। दाता! धीरज और बल देना इन मासूम गुरु-पुत्रों को ताकि ये कष्टों का सामना बहादुरी से कर सकें।"

किले की दीवार की नींव में चिनवाने की तैयारी आरंभ कर दी गई किन्तु बच्चों को शहीद करने के लिए कोई जल्लाद तैयार न हुआ। अकस्मात् दिल्ली के शाही जल्लाद साशल बेग व बाशल बेग अपने एक मुकद्दमे के सम्बंध में सरहिंद आये हुए थे। उन्होंने अपने मुकद्दमे में माफी का वायदा लेकर साहिबजादों को शहीद करना मान लिया।

साहिबजादा जोरावर सिंघ व साहिबजादा फतेह सिंघ को नींव में खड़ा करके उनके आस-पास दीवार चिनवानी प्रारंभ कर दी गई। बनते-बनते दीवार जब साहिबजादा फतेह सिंघ के सिर के निकट आ गई तो साहिबजादा जोरावर सिंघ दुखी दीखने लगे। काजी ने सोचा, शायद वे घबरा गए हैं और अब धर्म-परिवर्तन के लिए तैयार हो जायेंगे। उनसे दुखी होने का कारण पूछा गया तो साहिबजादा जोरावर सिंघ बोले, "मृत्यु का भय तो मुझे बिलकुल नहीं। मैं तो यह सोचकर उदास हूं कि मैं बड़ा हूं, फतेह सिंघ छोटा है। दुनिया में मैं पहले आया था, इसलिए यहां से जाने का भी पहला अधिकार मेरा है। फतेह सिंघ को धर्म पर बलिदान हो जाने का सुअवसर मुझसे पहले मिल रहा है।"

साहिबजादों ने अपना ध्यान गुरु-चरणों में जोड़ा और गुरबाणी का पाठ करने लगे। पास में खड़े काजी ने कहा, "अभी भी मुसलमान बन जाओ, छोड़ दिये जाओगे। साहिबजादों ने काजी की बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, बल्कि उन्होंने अपना मन प्रभु से जोड़े रखा। दीवार साहिबजादा फतेह सिंघ के गले तक पहुंच गई। साहिबजादे बेहोश हो गए। अचानक दीवार गिर पड़ी, साहिबजादे ईंटों के ढेर में पड़े थे तो काजी के संकेत से जल्लादों ने साहिबजादा फतेह सिंघ तथा साहिबजादा जोरावर सिंघ का शीश तलवार के एक वार से अलग कर दिया। इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सुपुत्रों ने अल्प आयु में ही शहादत प्राप्त की। यह साका १३ पौष सं. १७६३ को घटित हुआ।

स्थानीय निवासी टोडरमल को जब गुरदेव के साहिबजादों को यातनाएं देकर शहीद करने के हुक्म के विषय में ज्ञात हुआ तो वह अपना समस्त धन लेकर साहिबजादों को छुड़वाने के विचार से कचहरी पहुंचा, किन्तु उस समय साहिबादों को शहीद किया जा चुका था। उसने नवाब से अंत्येष्टि-क्रिया के लिए साहिबजादों के शव मांगे। वजीर खान ने कहा, "यदि तुम इस कार्य के लिए भूमि, स्वर्ण-मुद्राएं बिछा कर खरीद सकते हो तो तुम्हें शव दिये जा सकते हैं।" टोडरमल ने अपना समस्त धन भूमि पर बिछाकर एक चारपाई जितनी भूमि खरीद ली और तीनों शवों की एक साथ अंत्येष्टि कर दी।

यह सारा किस्सा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को नूरे माही द्वारा सुनाया गया तो उस समय अपने हाथ में पकड़े हुए तीर की नोक के साथ एक छोटे से पौधे को जड़ से उखाड़ते हुए गुरु जी ने कहा, "जैसे यह पौधा जड़ से उखड़ गया

(शेष पृष्ठ १४ पर)

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा

*-स. राजेंद्र सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की चमकौर की गढ़ी में से बचकर निकल जाने की खबर जब सरहिंद के सूबेदार वजीर खां को मिली तो उसने हर जगह मुनादी करवा दी कि गुरु गोबिंद सिंघ को पकड़ने के लिए पत्ता-पत्ता छान मारो। जो सिक्खों के गुरु की खबर देगा उसे भारी इनाम तथा आश्रय देने वाले को भारी दंड दिया जाएगा।

सारा दिन और अगली रात गुरु साहिब ने माछीवाड़े के जंगलों में गुजारी। पैरों में छाले पड़ गए, कपड़े झाड़ियों और कांटों में फंस-फंस कर छलनी हो गए।

साथी-विहीन, एकमात्र अकेले, बिना किसी सामान अथवा वस्तु के, नंगे पैर, भूख से बेहाल, इस दुनिया में रहते हुए भी दुनिया के लोगों से निराले, ऊंचे और सच्चे कलगीधर पातशाह किसी अनजान शक्ति के सहारे चलते गए, चलते गए। आखिर पैरों ने चलने से जवाब दे दिया। छाले फूल गए थे। चलते समय पीड़ा होती थी। आखिर थक कर जमीन पर लेट गए। पास पड़े पत्थर को सिरहाना (तकिया) बनाकर खुले आसमान के नीचे तारों के प्रकाश में धरती के साथ लिपट कर सो गए।

मुगल फौज ने शिकारी कुत्ते की भांति माछीवाड़े का जंगल छान मारा, पर सारे हिंदोस्तान की जालिम मुगल सरकार से टक्कर लेने वाले योद्धा गुरु जी उन्हें नहीं मिले। इस हालत में *'अकाल पुरख का भाणा'* मानते हुए गुरु जी ने लाख-लाख शुक्र किया और यह पावन शबद उच्चारण किया :

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा ॥
तुध बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहणा ॥
सूल सुराही खंजरु पिआला बिंग कसाईयां दा सहणा ॥
यारड़े दा सानूं सत्थरु चंगा भट्ठ खेड़िआ दा रहणा ॥ (खिआल पा: १०)

यह कोई प्रभु के आगे शिकवा अथवा शिकायत नहीं थी। मुसीबतों के पहाड़ सिर पर टूट पड़ने के समय प्रभु के आगे बिलबिलाना नहीं था। यह तो था अपने प्यारे मीत अकाल पुरख परमात्मा को ऐसा शुक्राने का संदेश जिस पर *'तेरा कीआ मीठा लागै'* की तालीम की चासनी चढ़ी प्रतीत होती थी।

सदा उन्नतिशील रहने वाले इस लासानी इंसान ने मुसीबतों को प्रभु की देन समझ कर वरदान में बदल दिया। ऐसे योद्धा गुरु ही जालिम मुगल हकूमत के साथ टक्कर ले सकते थे।

शीघ्र ही गुरु साहिब से बिछुड़े हुए तीन साथी बताई हुई तारों की सीध में चलते हुए ढूंढते-ढूंढते उन्हें जंगल में मिल गए और उन्हें गुलाबे मसंद के घर ले गए। मुगल सरकार से डरते हुए गुलाबे ने गुरु साहिब को अपने घर बहुत देर रखने से इंकार कर दिया।

गुरु साहिब ने तीनों साथियों सहित फिर जंगल की राह पकड़ी। रास्ते में उन्हें दो पठान भाई--नबी खां और गनी खां मिल गए। ये

दोनों संयोगवश गुरु साहिब के श्रद्धालु निकले, क्योंकि कभी इनका गुरु साहिब के साथ व्यापारिक अथवा व्यवहारिक संबंध रहा था। खुदा का भय रखने वाले पठान जिनके हो जाएं उन पर जान भी दे देते हैं। उन्होंने गुरु साहिब को अपनी जान पर खेल कर भी बचाने का निश्चय कर लिया।

मुगल फौजें पीछे लगी हुई थीं। गुरु साहिब के तीन साथियों और दोनों पठान भाइयों ने उन्हें बचाने के लिए एक तरकीब सोची। गुरु साहिब के चीथड़े हुए कपड़ों की जगह आप जी को नीले खद्दर के कपड़े पहनने की विनती की गई। गुरु जी का छालों के कारण पैरों से चलना मुहाल हुआ पड़ा था। उन्हें चारपाई की पालकी में बैठा दिया गया। चारों ने पालकी को कंधों पर उठाया और पांचवां उनके पीछे चंवर झुलाता हुआ चलने लगा। राह में जो कोई भी मिलता, कह देते, "ये उच्च के पीर हैं।" आगे चलकर मुगल फौज के एक दस्ते ने पालकी रोक कर पूछा, "ये कौन हैं?" पठानों ने वही उत्तर दिया, "हमारे उच्च के पीर!" मुगल फौज के दस्ते के कमांडर की तसल्ली न हुई। उसने एक काजी को बुलाकर पूछा।

काजी उस्ताद पीर मुहम्मद था, जिसने गुरु साहिब को अनंदपुर साहिब में बचपन में फारसी पढ़ाई थी। पहचान तो लिया, पर गुरु साहिब की महानता को जानते हुए उसने कमांडर को कह दिया, "ये जरूर कोई महान पीर हैं।" कमांडर ने पालकी को आगे ले जाने की आज्ञा दे दी। गुरु साहिब अपने श्रद्धालुओं की सहायता से मुगल फौजों के घेराव से फिर निकल गए।

गुरु साहिब ने पठान भाइयों को सहायता देने के उपलक्ष्य में सोने के दो कड़े और एक प्रशंसा-पत्र दिया। आज भी यह गुरु साहिब के हाथ की लिखी चिट्ठी पठानों के खानदान के पास मौजूद है।

('दशमेश पिता गुरु गोबिंद सिंघ' नामक पुस्तक से सधन्यवाद)

छोटी आयु के शहीद

(पृष्ठ १२ का शेष)

है ऐसे ही तुर्कों की जड़ें भी एक दिन उखड़ जाएंगी।"

फिर गुरु साहिब ने सिक्खों से पूछा, "मलेरकोटले के नवाब के अतिरिक्त किसी और ने साहिबजादों के पक्ष में आवाज उठाई थी?" सिक्खों ने सिर हिलाकर नकारात्मक उत्तर दिया। इस पर गुरु साहिब ने कहा, "तुर्कों की जड़ें उखड़ने के बाद भी मलेरकोटले के नवाब की जड़ें कायम रहेंगी। मेरे सिक्ख एक दिन सरहिंद की ईंट से ईंट बजा देंगे। मलेरकोटला की जड़ें आज तक कायम हैं। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने १७१० ई में सरहिंद शहर की ईंट से ईंट बजा दी थी :

--यह गर्दन कट तो सकती है मगर झुक नहीं सकती।
कभी चमकौर बोलेगा कभी सरहिंद की दीवार बोलेगी। (सरदार पंछी)

--हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नीव हम हैं सरों पर उठा चले। . . .
सिंघों की सलतनत का हैं पौधा लगा चले।
(हकीम अल्ला यार खां जोगी)

पहाड़ी राजाओं से दूसरा युद्ध

-प्रो. महेन्द्र जोशी*

नित्य बढ़ती गुरु जी की शक्ति से,
पहाड़ी राजे अति आतंकित थे।
कैसे अंत हो इस शक्ति का,
वे नित्य सोचते रहते थे।
जिस धर्म की करने को रक्षा,
साजा गुरु जी ने था खालसा।
उसी धर्म के राजाओं ने था
खोला गुरु जी के विरुद्ध मोर्चा।
दुर्भाग्य कहें इसे देश का,
जो न होना चाहिये था हुआ।
आपस में इन युद्धों का था,
विधर्मी शासन को लाभ हुआ।
गुरु जी गये एक दिन वन में,
जाकर वहां शिकार खेलने।
कुछ ही सिक्ख थे उनके साथ,
आक्रमण किया राजाओं ने।
एक राजा आलमचंद था,
और नृप दूसरा बलिया था।
कुछ देर भीषण हुई लड़ाई,
मारा गया नृप बलिया था।
अब शत्रु सभी वहां से भागे,
पत्तों जैसे पवन के आगे।
गुरु जी के तीरों की बौछारें,
सहन नहीं कर सके अभागे।
क्रोध राजाओं को आया,
आयोजन फिर नया बनाया।
सरहिंद के सूबेदार को,
अब उन्होंने साथ मिलाया।
साथ मिल कर युद्ध करने को,
अनंदपुर को लूटने को।
सेना के संग भेजा उसने,
दीना बेग और पैंदे खां को।
अनंदपुर पर की चढ़ाई,
मिलकर सभी ने की लड़ाई।
तीस दिन तक युद्ध चला,
विजय अंत सिक्खों ने पाई।
एक भयंकर युद्ध हुआ था,
कितना मानव-रक्त बहा था!
गुरु जी के तीखे बाण से,
पैंदे खां वहीं ढेर हुआ था।
दीनाबेग वहां से भागा,
नहीं देखा कुछ पीछा-आगा।
ज्यों भागें मृग सिंह के आगे,
शत्रु का हर सैनिक भागा।
आक्रमण और भी कई हुए,
असफल राजे हर बार हुए।
और अंत गुरु जी का करने को,
औरंगजेब की शरण गये।
शहनशाह बहुत प्रसन्न हुआ,
उसका मनचाहा काम हुआ।
सिक्खों की शक्ति के अंत का,
था अवसर उसको आज मिला।
राजाओं की सहायता को,
भेजा उसने सैदा खां को,
और अनंदपुर जीतने को।
वीरता सिक्खों ने दिखलाई,
और अति भीषण की लड़ाई।
सैदा खां वहां टिक न पाया,
औ उसने भी पीठ दिखाई।

*३०-ए, गोपाल नगर, श्री अमृतसर-१४३००१

गुरबाणी में ब्रह्मांड-विज्ञान

*-डिंपल रानी**

आधुनिक मानव चाहे अपने आप को मानसिक तौर पर कितना भी विकसित समझे परन्तु उसकी योग्यता, उसका मस्तिष्क प्रकृति के केवल कुछ अंश की ही जानकारी प्राप्त कर सकता है। उस सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वकर्त्ता परमात्मा की रचना अर्थात् सृष्टि का पार नहीं पाया जा सकता:

अंत कारणि केते बिललाहि ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥ *(पन्ना ५)*

जपु जी साहिब की ये पंक्तियां इस बात को पूर्णत: पुष्ट करती हैं कि मनुष्य चाहे जितना भी इस प्रकृति का अंत पाने के लिए तड़पता रहे परन्तु फिर भी उसका अंत नहीं पा सकता अर्थात् समस्त प्राणी-जाति में सर्वश्रेष्ठ मानव के द्वारा भी इस असीम कुदरत का अंत पाना असंभव है। जन्म से ही जिज्ञासु मनुष्य कुछ न कुछ खोजने की इच्छा में निरंतर अथक प्रयास करता रहता है जिसे गुरबाणी में इस तरह वर्णन किया गया है :

आदि अंति बेअंत खोजहि . . . ॥ *(पन्ना ४५६)*

इसी जिज्ञासा के परिणामस्वरूप ही मानव अनंत प्रयत्नों द्वारा इस ब्रह्मांड के जन्म को जानना चाहता है। इस विषय पर आकर विज्ञान मौन हो जाता है कि ब्रह्मांड के जन्म से पहले क्या था? विज्ञान कहता है :

It is meaningless to talk about 'before' the big bang because time didn't exist.

गुरबाणी इस अवस्था को कुछ इस तरह बयान करती है :

अरबद नरबद धुंधूकारा ॥
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥
ना दिनु रैनि चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ *(पन्ना १०३५)*

उस बह्मांड से पूर्व भी कुदरत एक गर्भरूप शिशु की भांति असीम निद्रा में थी, जहां ब्रह्मांड चरम-सूक्ष्मावस्था में एक बिन्दु की भांति था, परन्तु इस अवस्था के समय को भी नहीं निरूपित किया जा सकता :

केतड़िआ दिन गुपतु कहाइआ ॥
केतड़िआ दिन सुंनि समाइआ ॥
केतड़िआ दिन धुंधूकारा
आपे करता परगटड़ा ॥ *(पन्ना १०८१)*

विज्ञान के अनुसार इसे 'इन्फाइनाइट' अथवा 'अनन्तता' की अवस्था कहा जाता है। वह मानता है कि इस अनन्तता की अवस्था में एक शक्तिशाली विस्फोट (बिग बैंग) हुआ जिससे एक सुपर शक्ति उत्पन्न हुई, जिससे मैटर तथा ऐंटी मैटर का जन्म हुआ, जिससे समय एवं तापमान के परिवर्तित होने के साथ-साथ हीलीयम ऐटम का जन्म हुआ, जिसके द्वारा पदार्थ अस्तित्व में आए और इस प्रकार ब्रह्मांड का जन्म हुआ।[१] परन्तु स्टीफन हांकिग द्वारा उठाए गए अनेक प्रश्नों का समाधान इस बिग-बैंग थिउरी के पास नहीं है। गुरबाणी इस अवस्था के सम्बंध में कहती है:

**शोधकर्ती संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-१४७००२।*

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
(पन्ना ४)

विज्ञान मानता है कि वह केवल-मात्र ब्रह्मांड के १० प्रतिशत भाग को ही अभी तक जान सका है, जबकि ९० प्रतिशत उसकी पहुंच से दूर है, जिसे वह अपनी भाषा में **'Dark Matter'** कहता है।[२] जैसे-जैसे वह उसे जानने का प्रयास करता है वैसे-वैसे वह अनन्तता को प्राप्त होता जाता है :

एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ (पन्ना ५)

गुरबाणी में आज से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व ही कह दिया था कि ब्रह्मांड आत्मस्वरूप से भिन्न नहीं है :

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
(पन्ना ६९५)

विज्ञान के अनुसार ब्रह्मांड में **'काले कूप'** अथवा **'ब्लैक होल'** हैं, जो राक्षसों की भांति अपनी सीमा में आने वाले अनंत तारों, उपग्रहों, तारिका-मंडलों को निरंतर निगलते जा रहे हैं, जिसके लिए उन्हें मात्र एक सेकंड के हजारवें हिस्से से भी कम समय लगता है।[३] गुरबाणी में भी मनुष्य के भीतर के **'ब्लैक होल्स'** अथवा **'अंध-कूपों'** का अस्तित्व माना गया है जो निरंतर मानव के गुणों को खा रहे हैं। इनसे पार पाना तुच्छ मानव-मस्तिष्क के वश में नहीं, प्रत्युत् एकमात्र गुरु की पूर्ण कृपा से ही इन अंध-कूपों से बचा जा सकता है, अन्यथा नहीं :

--अंध कूप ते कढै चाड़े ॥
करि किरपा दास नदरि निहाले ॥ (पन्ना १३२)
--अंध कूप ते काढे आपि ॥
गुण गोविंद अचरज परताप ॥ (पन्ना १९८)
--अंध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ (पन्ना २०८)
--अंध कूप ते तिह कढहु जिह होवहु सुप्रसंन ॥
(पन्ना २५५)

इस प्रकार मानव तथा समस्त प्राणी-जगत की भांति ग्रह, उपग्रह भी कुदरत के नियम के अधीन हैं अन्य शब्दों में इन पर जन्म-मरण का बंधन लागू होता है। ये अन्ध-कूप या ब्लैक होल भी जन्म लेते हैं और नष्ट भी होते हैं :

जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥
(पन्ना ६१)

इसी ब्रह्मांड के कण-कण में अनहद नाद समाहित है जिसके परिणामस्वरूप ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु थिरकती है अथवा परिक्रमा करती है :

कोलू चरखा चकी चकु ॥
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥
पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥
सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥
नानक भउदिआ गणत न अंत ॥ (पन्ना ४६५)

ब्रह्मांडस्थ सूर्य, ग्रह, उपग्रह, तारे, तारिकामंडल आदि प्रत्येक बड़ी से बड़ी वस्तु से लेकर प्रत्येक सूक्ष्म वस्तु परिक्रमा करती है। यहां तक कि ऐटम जो प्रत्येक पदार्थ का आधार है, वह भी अपने न्यूक्लीयस नामक केन्द्र के गिर्द घूमते हैं।[४]

असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥
दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥ (पन्ना ६४)

ठीक इसी तरह मानव भी बचपन से लेकर बुढ़ापे तक क्रमशः माता-पिता, पत्नी, परिवार, बच्चों आदि को ही केन्द्र मानकर उनके इर्द-गिर्द चक्कर लगाता है। वह आजीवन इससे निकल नहीं पाता, जिसको गुरबाणी में इस तरह विवेचित किया है :

--घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरमुखि नानक पारि उतारी ॥ (पन्ना ९१६)

--नाम बिना सभि फीक फिकाने जनमि मरै फिरि आवैगो ॥
माइआ पटल पटल है भारी घरु घूमनि घेरि घुलावैगो ॥ (पन्ना ९१६)

इसी जीवन के एक और पक्ष पर ध्यान देते हैं कि यह जीवन केवल पृथ्वी पर ही है या कहीं और भी यह जीवन पाया जाता है? अथवा यह जीवन अनंत है? इसके विषय में विज्ञान यदि जीवन की खोज आरंभ करे तो भी वह मात्र सौरमंडल का ही सम्पूर्ण-रूपेण सर्वेक्षण के बारे में सोच भी नहीं सकता।[५] इस असीमित ब्रह्मांड में एक-एक तारा लगभग एक सूर्य के बराबर है जिसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि सूर्य का प्रकाश धरती पर केवल आठ मिनट में पहुंचता है, जबकि एक तारे का प्रकाश यह दूरी ४.२ वर्षों में तय करता है।[६] यदि प्रकाश ही इतने वर्षों में पहुंच पाता है तो मनुष्य को उसके ग्रहों, उपग्रहों तक पहुंचने के लिए कितने सौ वर्ष चाहिए? वहां तक तो दूर की बात यदि वैज्ञानिक सूर्य के प्लूटो नामक ग्रह पर जाना चाहें और इसके लिए वो आवाज की गति के बराबर अर्थात् अत्यंत तीव्र वायुयान से भी जाना चाहें तो भी उन्हें वहां तक पहुंचने में लगभग ११५ वर्ष का समय चाहिए। गुरबाणी में फरमान है :

--अंतु न जापै कीता आकारु ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥ (पन्ना ५)

--अनिक पुरीआ अनिक तह खंड ॥
अनिक रूप रंग ब्रहमंड ॥ (१२३६)

अतः गुरबाणी अनुसार जीवन अनंत है। इसके सम्बंध में वैज्ञानिकों ने कहा था कि यदि सौर मंडल में धरती के अतिरिक्त कहीं भी जीवन पाया गया तो वे जीवन की अनंतता को स्वीकार कर लेंगे। सन् १९९६ में मंगल ग्रह से आए उल्का पिंड के अध्ययन के पश्चात् डेविड मैके नामक एक विज्ञानी ने यह बात सिद्ध की कि सदियों पूर्व यहां पर जीवन माइक्रोओरगैनिज़्म के रूप में पाया जाता था। इसके अतिरिक्त शनि और बृहस्पति ग्रहों के क्रमशः 'टाइटन' तथा 'यूरपा' नामक उपग्रहों पर भी जल की मौजूदगी पाई गई है,[७] जिससे वहां भी जीवन की संभावना हो सकती है। अतः उस अनंत जीवन की अनंतता के विषय में गुरबाणी कहती है :

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥
(पन्ना ५)

इस प्रकार हम देखते हैं कि गुरबाणी में अध्यात्म के अतिरिक्त विज्ञान से सम्बद्ध पर्याप्त सामग्री मिलती है। प्रस्तुत आलेख में ब्रह्मांड को आधार बनाकर इस तथ्य को प्रमाणित किया गया है, यथा ब्रह्मांड की अनंतता, अन्ध-कूपों का अस्तित्व, ग्रहों की भ्रमणशीलता, जीवन की अनंतता आदि ऐसे तथ्य हैं जिन्हें विज्ञान ने आज प्रमाणित किया, परन्तु गुरबाणी उन्हें लगभग ५०० वर्ष पहले ही विवेचित कर चुकी है। इस प्रकार गुरबाणी का वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्त्व स्वीकार्य है।

शहीद स. करतार सिंघ सराभा

*-डॉ. मनमोहन सिंघ**

लुधियाना जिले के गांव सराभा में सरदार मंगल सिंघ के घर जन्मे स. करतार सिंघ सराभा बचपन से ही विचारशील थे। बचपन में ही सिर से पिता का साया उठ जाने के बाद स. करतार सिंघ को उनके दादा जी ने ही संभाला। वर्ष १८९६ ई में जन्मे स. करतार सिंघ ने १४ वर्ष की आयु में मालवा खालसा हाई स्कूल, लुधियाना से दसवीं की कक्षा पास की। ऊंची शिक्षा के लिए दादा ने अपने पोते को अमेरिका भेजना ही उचित समझा।

इन्ही दिनों बहुत से हिन्दुस्तानी जो रोजगार के लिए अमेरिका व कनाडा में पहुंचे हुए थे, उन्हें बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। यहां हिन्दुस्तानियों के साथ रंग, नस्ल व गुलाम होने के कारण दुर्व्यवहार किया जाता था। हिन्दुस्तानियों को अपने आत्म-सम्मान व गुलामी का अहसास होने लगा, इसलिए उन्होंने 'गदर' नाम की एक पार्टी बनाई। स. सोहन सिंघ भकना को इस पार्टी का प्रधान व लाला हरदयाल को सेक्रेटरी चुना गया। सरदार करतार सिंघ सराभा ने अपने हिन्दुस्तानी मजदूरों के साथ कार्य करना शुरू कर दिया। उन्होंने सारे हिन्दुस्तानी मजदूरों को देश को आजाद करवाने की शिक्षा दी।

विदेशियों की धरती पर वह हर पल यही सोचता कि मेरे देश की पहचान क्या है? मेरा सभ्याचार क्या है? मेरी भाषा कौन-सी है? इन सारे सवालों को बहुत बड़ा धक्का उस दिन लगा जब उसके घर आई एक औरत ने सवाल किया कि करतार सिंघ, तेरे देश का झंडा कौन-सा है? स. करतार सिंघ आशंका में फंस गया। कौन-सा बताऊं? यूनियन जैक मेरे देश का झंडा नहीं है।

वह जिस महफिल में जाता गोरे लोग उसे 'ब्लैक बासटर्ड' या 'कुली ब्लैक' कहकर डंक मारते। स. करतार सिंघ उदास रहने लग गया। इस आयु में उदासी व्यक्ति को किसी भी दिशा में ले जा सकती है। स. करतार सिंघ ने इस उदासी को तन्दरुस्ती की तरफ मोड़ा। वह इन्कलाबी देश-भक्तों की मीटिंगों में जाने लगा। गोरे लोगों द्वारा मारे गये ताने उसे हर वक्त बेचैन रखते। सेन फ्रांसिस्को गदर पार्टी के दफ्तर में वह बाबा सोहन सिंघ भकना, बाबा हरनाम सिंघ टुंडीलाट, बाबा प्रिथी सिंघ आजाद व लाला हरदयाल जैसों के साथ बैठकर समस्याओं पर विचार करता। पार्टी द्वारा निकाले गये अखबार 'गदर' के लिए वह कविताएं लिखने लगा। कविताओं वाला बहुत सारा कार्य स. करतार सिंघ व टुंडीलाट ही करते थे। लेख लिखने का कार्य लाला हरदयाल के जिम्मे था। सारा पर्चा हस्तलिखित ही होता था। स्टेन्सिल काट कर साईक्लो स्टाईल पर्चा खुद मुकम्मल करने की जिम्मेदारी भी स. करतार सिंघ की ही थी।

'गदर' का प्रथम अंक १ नवंबर, १९१३ को पाठकों के पास पहुंचा। इंकलाबी जद्दोजहद को आर्थिक रूप से आजाद करने के उद्देश्य से स. करतार सिंघ ने एक जहाजी कंपनी में नौकरी कर ली। वहां रहकर ही उसने जहाज चलाने व उसकी मुरम्मत करने का कार्य सीखा।

८८९, फेज-१०, मोहाली-१६००६२

इसका शायद पहला कारण यह था कि स. करतार सिंघ अंग्रेजों के साथ लम्बी लड़ाई लड़ने का प्रबंध कर रहा था। जब कामागाटामारू जहाज अंग्रेजों ने कनाडा की बंदरगाह पर नहीं लगने दिया तब स. करतार सिंघ बाबा गुरदित्त सिंघ को जापान मिलने के लिए आया था। स. करतार सिंघ उस वक्त अमेरिका में रह रहे भारतीयों के हरमन-प्यारे नेता बन चुके थे। स. करतार सिंघ व उनके साथियों ने फरवरी १९१४ में स्टाकसन में तिरंगा झंडा भी लहराया था। प्रथम विश्व युद्ध के समय जब अंग्रेज बिलावाड़ में फंसा हुआ था, गदर पार्टी ने गर्म लोहे पर चोट मारना उचित समझा व कुछ नौजवानों का दल इंकलाब करने के लिए भारत भेजा। इन नौजवानों में सरदार करतार सिंघ सराभा, स. बंता सिंघ सघेवाल, स. हरनाम सिंघ टुंडीलाट और स. हरनाम सिंघ कहरी आदि थे। इन इंकलाबियों का स्वागत करने के लिए 'इंडिया सेफ्टी एक्ट' पहले ही बांहें फैलाए हुए था। स. करतार सिंघ स्फूर्ति के साथ निकले। उन्हें अमेरिका से चलते हुए ये बोल बार-बार याद आ रहे थे :

चलो चल्लिए देश लई युद्ध करन,
एही आखरी बचन फुरमान हो गये।

श्री विष्णु गणेश पिंगले के बाद बनारस साजिश केस में फंसने वाले श्री सचिन्द्र नाथ सान्यवाल ने भी अपनी सरगर्मियों का मुख्य केन्द्र पंजाब को ही बनाया हुआ था। श्री रास बिहारी बोस के आने से तो सारा पंजाब ही इंकलाबी रंग में रंग गया। इन्कलाबी लहर को तेज करने के लिए पैसे की जरूरत थी। पंजाब के कुछ अच्छे खाते-पीते लोग इन्कलाबियों को पकड़वाने में लगे हुए थे। पार्टी ने फैसला किया कि इस किस्म के धनाढ्य लोगों से आर्थिक सहायता मांगना कोई गुनाह नहीं। इस फैसले के अनुसार स. करतार सिंघ व साथी किसी गांव में सहायता मांगने गये। साथ में गये किसी साथी ने घर की जवान लड़की के साथ छेड़खानी करनी चाही, जिसका स. करतार सिंघ को पता लगा तो उसने उस साथी को लड़की से माफी मांगने के लिए कहा। लड़की की मां ने स. करतार सिंघ से पूछा कि "तू तो कितना अच्छा है।" स. करतार सिंघ का उत्तर था, "मां! हम कोई जोर-जबरदस्ती करने वाले नहीं, इन्कलाबी हैं। अंग्रेजों को अपने देश से भगाने के लिए पैसों की जरूरत है जो हमारे पास नहीं हैं।" उस औरत ने जब लड़की की शादी के लिए पैसे जोड़कर रखने की बात बताई तो स. करतार सिंघ ने उनसे सहायता लेने से मना कर दिया।

गदर पार्टी ने पंजाब तथा आसपास के दूसरे सूबों की फौजी छावनियों में फौजियों से सम्पर्क बना कर उन्हें विद्रोह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। लाहौर व फिरोजपुर की छावनियों में कुछ पलटनें विद्रोह करने के लिए तैयार हो गयीं। इन्कलाबी पार्टी द्वारा २१ फरवरी, १९१५ का दिन बगावत के लिए निश्चित किया गया। इनके साथियों में से ही एक जो पुलिस द्वारा भेद लेने के लिए पार्टी में शामिल था, उसने पुलिस को सूचना दे दी। स. करतार सिंघ को गिरफ्तार करके लाहौर लाया गया जहां उस पर लाहौर साजिश केस का मुकद्दमा चलाया गया। अंततः १९ नवंबर, १९१५ को फांसी पर चढ़कर स. करतार सिंघ ने शहीदों की तरह कुर्बानी दे दी। जेल के रिकार्ड के अनुसार फांसी वाले दिन स. करतार सिंघ के मुखड़े पर नूर था, भार आम दिनों से १० पौंड अधिक था, होठों पर ये बोल थे :

शहीदों की चिताओं पर, लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।

चरित्र ही सच्चा धन है

-डॉ. दादूराम शर्मा*

धर्म के अनुसार मनुष्य के लिए चरित्र ही धन है, वही उसका लक्ष्य है, वही साध्य और प्राप्य (पाने योग्य) है, इसलिए उसकी प्रयत्नपूर्वक रक्षा की जानी चाहिए और धन तो साधन मात्र है, इसलिए इसके पीछे भागना ठीक नहीं।

क्योंकि धन-हानि से मनुष्य की कोई बड़ी हानि नहीं होती किन्तु चरित्र की हानि होने पर उसका सब कुछ चला जाता है, उसका जीवन ही व्यर्थ हो जाता है। कई अंग्रेज विचारकों ने तो धन-हानि को हानि ही नहीं माना है जैसे **(If wealth is lost, nothing is lost.)** किन्तु चरित्रनाश को उन्होंने सर्वनाश की संज्ञा दी है **(If character is lost everything is lost.)**

किन्तु विज्ञान के द्रुतगामी रथ पर सवार होकर मानव सभ्यता ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती गई, संस्कृति (अध्यात्म, नीति, जीवन-मूल्य) पीछे छूटती गई और हमारा समग्र चिन्तन और जीवन-दर्शन आत्मा और परमात्मा की सत्ता को भी नकार कर शरीर और उसकी सुख-सुविधाओं पर ही केन्द्रित होता गया। परिणामस्वरूप उनका साधनभूत धन (वित्त) रक्षणीय हो गया और चरित्र (वृत्त) हेय और उपेक्षणीय हो गया।

हमारे जीवन और समाज के विकास का प्रमुख आधार होने से वित्त के महत्व को सदैव स्वीकारा गया है, क्योंकि धन के चले जाने पर व्यक्ति अर्थहीन समझा जाता है, फिर उसे कोई नहीं पूछता।

व्यक्ति में जब तक धनोपार्जन की शक्ति रहती है तब तक परिवार उससे प्रेम करता है, किन्तु जब बूढ़ा होकर वह धन कमाने योग्य नहीं रह जाता तो घर में उसे कोई नहीं पूछता।

धन कमाने के लिए आदमी कैसे-कैसे स्वांग नहीं रचता! धन की ऐषणा (उद्दाम लालसा) का कोई अंत नहीं है। जो लखपति है वह करोड़पति बनना चाहता है, करोड़पति अरबपति बनने के चक्कर में है, अरबपति खरबपति बनने के लिए रात-दिन एक कर रहा है। फिर भी धन की चाह है कि बढ़ती ही जाती है। गुरबाणी का फरमान है :

किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख त्रिसना भुख न जाइ ॥ *(पन्ना ६४९)*

इस तृष्णा के रोग को संतोष की औषधि से ही दूर किया जा सकता है। गुरबाणी में कितनी सटीक बात कही है :

त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥
महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ *(पन्ना ६८२)*

संतोष सबसे बड़ा धन है। उसके मिलते ही आदमी का भटकाव रुक जाता है। अनचाही पदार्थ एकत्र करने की दौड़ पर विराम लग जाता है। तृष्णा दुखों की खान है तो संतोष सुखों का भंडार है। इसी लिए "संतोषी सदा सुखी" कहा गया है। संतोष मनुष्य को चरित्रवान बनाता है तो धन-संग्रह की होड़ उसे चरित्र-भ्रष्ट बना देती है। धन नश्वर है। उससे पुष्ट होने वाला यह शरीर भी नश्वर है, जबकि चरित्र अमर है। चरित्र से निर्मित यश: भी अमर है। तभी तो भक्त कबीर जी कहते हैं :

*महाराज बाग, भैरवगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

अगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न आवै ॥
राम नाम धनु करि संचउनी सो धनु कत ही न जावै ॥ (पन्ना ३३६)

मानव के इस मरणधर्मा शरीर की अंत में तीन ही गतियां होती हैं। यदि दफना दिया जाता है तो उसे कीड़े खा जाते हैं, दाह-संस्कार करने पर यह राख़ में बदल जाता है और किसी जंगली जानवर ने खा लिया तो उसकी विष्टा बन जाता है। जब हंस (आत्मा) इस शरीर को छोड़कर चला जाता है तो इसके सभी से सारे रिश्ते टूट जाते हैं। तब यह न तो किसी का पति रह जाता है, न पिता, न पुत्र, न भाई, न मित्र। 'प्रियतम' कहकर पुकारने वाली पत्नी भी इससे डरने लगती है। तब यह शव मात्र रह जाता है। श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा में इसीलिए मनुष्य को चेतावनी दे रहे हैं:

जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
(पन्ना १३४)

यह धरती, यह संसार मनुष्य का कर्म-क्षेत्र है। इस खेत में जो जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा। जो प्रभु को अर्पण करके कर्म करेगा वह सत्कर्म ही करेगा, कुकर्मों से दूर रहेगा। सद्गुरु श्री गुरु नानक देव जी की "प्रभ सरणागती" सत्कर्मों में ही मनुष्य को लगाए रहती है। प्रभु के 'चरण बोहिथ' (नाव) से वह भवसागर पार हो जाता है :

नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
(वही)

जग को ज्ञान दिया रुशनाया!

*-डॉ दीनानाथ शरण**

गुरु नानक ने अंधकार मिटाया।
जग को ज्ञान दिया रुशनाया।
अंधविश्वास को सुलझाकर,
लोगों को सत्य-पथ दिखलाया।
देश-विदेशों की यात्रा कर,
जागरण का चिराग जलाया।
गुरु नानक ने
सदाचरण का उपदेश दिया।
अपने श्रम की रोटी खानी
यह सबको आदेश दिया।
करता पुरखु निरभउ निरवैरु,
अकाल मूरति! पालक! पोषक!
पारब्रहम का संदेश दिया,
उसके थे संदेश-संवाहक!
'उदासी' यात्राएं हैं उनकी,
अनुभूति की, गहन अध्ययन की।
'परम सत्ता' की व्यापकता की,
ੴ चिन्तन-मनन की।
श्रद्धा से झुक जाता माथा,
उनकी हम सब गाते गाथा।
गुरु नानक को जिसने माना,
दुख कष्ट उसका सब भागा।

**दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८००००४ (बिहार)*

जीवन का अंतिम पड़ाव : बुढ़ापा

-श्री अमृत लाल मंनण*

बुढ़ापा या वृद्ध अवस्था मानवी जीवन का अंतिम पड़ाव है। इस समय मनुष्य शारीरिक रूप से निर्बल हो जाता है, जब उसकी सुनने की शक्ति, निगाह अथवा देखने की शक्ति में कमी, पाचन-प्रणाली में गड़बड़, स्मरण शक्ति का कम होना आदि अनेक समस्याओं से उसका सामना होता है तथा और भी अनेकों ही कमजोरियां और बीमारियां उसे आ घेरती हैं।

आजकल वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण भले ही इन मुश्किलों पर कुछ सीमा तक काबू पाया जा सकता है परंतु यह पूर्णत: संभव नहीं है। बुढ़ापे में शारीरिक कमजोरी के कारण व्यक्ति को अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए दूसरों पर निर्भर होना पड़ता है। हरेक बुजुर्ग व्यक्ति की समस्याएं भी अलग-अलग हैं, जैसे किसी बुजुर्ग की आर्थिक समस्या है तो किसी की शारीरिक तथा किसी की घरेलू समस्या है तो किसी की मानसिक। कुछ बुजुग ऐसे भी हो सकते हैं जो एक समय अथवा एक साथ इनमें से दो समस्याओं के रूबरू हों, कुछ तीन समस्याओं के, चार के अथवा पांचों प्रकार की समस्याओं के भी शिकार पाये जा सकते हैं। आओ, हम इन समस्याओं और इनके संभव-संभावी समाधान के बारे में विचार करें।

आर्थिक समस्या

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर व्यक्ति की काफी समस्याओं का समाधान हो जाता है, क्योंकि वह अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की आसानी से पूर्ति कर सकता है, जैसे वह अच्छी से अच्छी डॉक्टरी सुविधाएं ले सकता है, अच्छी खुराक खा सकता है, काम-काज के लिए नौकर रख सकता है, परंतु यदि आर्थिक पक्ष से वह कमजोर है और उसकी बांह पकड़ने अथवा आर्थिक सहायता करने वाला कोई नहीं तो बुढ़ापा रुल जाता है। बुजुर्ग व्यक्ति को अपने जीवन के अंतिम चरण के लिए अवश्य कुछ बचा कर रखना चाहिए। जो व्यक्ति सारी आयु में अपने परिवार के लिए इतना कुछ करता है और जैसे-कैसे परिवार की सभी आवश्यकताएं पूरी करता है, वही परिवार वाले बच्चे जब बड़े होकर अपना परिवार बना लेते हैं तो प्राय: देखा-परखा गया है कि वे मात्र अपने निज परिवार यानी अपनी पत्नी और बच्चों की तरफ ही ध्यान देते हैं तथा बुजुर्गों को भूल ही जाते हैं। ऐसे वक्त में बुजुर्ग हो चुके व्यक्ति ने यदि कठिन दिनों के लिए कुछ बचा कर न रखा हो तो उसकी स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती है। चाहे सरकार ने आर्थिक तौर पर कमजोर व्यक्तियों के लिए बुढ़ापा पेंशन का प्रबंध किया है परंतु यह राशि इतनी नहीं कि इसके साथ सब जरूरतें पूरी हो सकें। भाग्यशाली हैं वे बुजुर्ग व्यक्ति जिनके बच्चे उनकी सुख-सुविधाओं का पूरा ख्याल रखते हैं।

शारीरिक समस्याएं

बुढ़ापे के कारण व्यक्ति को अनेकों शारीरिक समस्याएं आ घेरती हैं जो कि उसको तो तंग करती ही हैं इसके साथ-साथ परिवार के सदस्यों के लिए भी मुसीबत बनती हैं। यदि बुढ़ापे में

*मकान नं: ३१८५, पट्टी सुलतान, गांव तथा डाक सुलतानविंड, श्री अमृतसर मो: ९४६३२-२४५३५

कोई नामुराद बीमारी लकवा, कैंसर, गठिया आदि लग जाए तो व्यक्ति जहां खुद असीम दुख भोगता है वहां परिवार के शेष सदस्यों के लिए भी, जो कि अपने-अपने कामों में व्यस्त होते हैं, एक समस्या बन जाती है। परिवार के सदस्य बुजुर्ग माता-पिता अथवा दादा-दादी की पूरी देखभाल नहीं कर सकते। कई बार तो उनकी वास्तविक विवशता भी होती है परंतु कभी-कभी वे जानबूझ कर देखभाल में अवहेलना तथा लापरवाही भी दिखाते हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि आपका जीवन-साथी आपके साथ है तो आप परस्पर सहायक हो सकते हैं। यदि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है और किसी कारणवश आपके बच्चे आपकी देखभाल नहीं कर पाते तो आपको देख-जांच कर कोई अच्छे स्वभाव तथा चरित्र वाला सेवादार रख लेना उचित होगा। मैं तो यह भी कहने से नहीं झिझकूंगा कि चाहे बच्चों का अपने बुजुर्ग माता-पिता की सेवा करना आवश्यक पवित्र फर्ज अथवा धर्म है परंतु विशेष चुनौती वाली परिस्थितियों में यदि घर में कोई आपकी देखभाल करने वाला नहीं तो वृद्ध-आश्रम ही सही स्थान हैं जहां व्यक्ति अपनी आयु के साथियों के साथ दुख-सुख सांझा कर सकता है और साथ ही बुजुर्ग व्यक्ति प्रबंधकों की निगरानी तथा सुरक्षा में भी रहता है।

पारिवारिक समस्याएं

बुजुर्ग व्यक्ति कई प्रकार की पारिवारिक समस्याओं से भी घिरे होते हैं। पारिवारिक समस्याओं की गिनती तथा घनता परिवार की संरचना पर बहुत सीमा तक निर्भर करती है। मैं पुत्रियों के संबंध में अच्छी सोच व दृष्टि रखने के बावजूद इतना अवश्य कहूंगा कि बुढ़ापे में आपकी पारिवारिक समस्याएं कई बार परिवार में केवल बेटियां होने के कारण भी उत्पन्न हो जाती हैं। यह बात अलग है कि कुछ बेटियां अपने तौर पर विशेष प्रयत्नों से अपने माता-पिता की देखभाल तथा सेवा-संभाल की जिम्मेदारी पूरी तरह निभाती हैं, परंतु यह हकीकत है कि हमारे समाज में विवाह के उपरांत बेटियां दूसरे घर चली जाती हैं, जिनको हमारी परपंरा में उनका असली घर भी कहा जाता है। बुजुर्गों ने प्राय: पुत्रों के पास ही रहना होता है। यदि पुत्र नहीं हैं तो बुजुर्ग अकेले रह जाते हैं और अन्य कई प्रकार की समस्याओं का सामना करते हैं। एक स्थिति और भी बनती है, जिसमें यदि पत्नी या पति में से एक साथ छोड़ चुका है तो बुढ़ापा और अधिक कष्टदायक हो जाता है।

कई बार बहू, सास या ससुर के बीच में अनबन रहती है। ऐसी स्थिति में बुढ़ापा नरक बन जाता है। लेकिन यदि सावधानी तथा उचित ध्यान दिया जाए तो ऐसी स्थितियों को टालना काफी सीमा तक संभव है। परिवार के सभी सदस्य यदि एक-दूसरे के प्रति अपनी बनती जिम्मेदारी समझदारी तथा अपनेपन के साथ निभायें तो पारिवारिक सुख सुनिश्चित बनाया जा सकता है। परिवार हमेशा आत्म-त्याग और छोटी-बड़ी कुर्बानियां करने से ही चल पाते हैं। बुजुर्गों के लिए भी यही शोभनीय है कि वे अपनी शारीरिक शक्ति और क्षमता के अनुरूप परिवार के छोटे-मोटे कामों में अपना योगदान डालें, पौत्र तथा पोतियों को प्यार-दुलार करें। माफ करना, जो बुजुर्ग मात्र अपनी सुख-सुविधायों के लिए ही चिंतित रहते हैं वे परिवार से अधिक देर तक प्यार-सत्कार नहीं प्राप्त कर सकते।

मानसिक समस्याएं

अक्सर देखा गया है कि बुजुर्ग व्यक्ति नकारात्मक सोच वाला हो जाता है। वह समझने लग जाता है कि किसी को उसकी परवाह नहीं है, कोई उसके पास बैठकर सुख-

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

बुजुर्गों के प्रति बच्चों के कर्त्तव्य

*-बीबी बलवंत कौर चांद**

जिन बच्चों के सिर पर माता-पिता का साया है वे बच्चे बहुत भाग्यशाली होते हैं। वे तब तक अपने आप को बच्चे ही समझते हैं जब तक उनके बुजुर्ग उनके सामने विद्यमान हों। भाईचारे में किसी तरफ लेन-देन का चक्र पड़े माता-पिता झट उसका हल निकाल लेते हैं। बुजुर्गों के होते शरीके-भाईचारे के दुख-सुख में शरीक होने का फिक्र नहीं, वे स्वयं ही हो आएंगे। आप ने कहीं जाना हो तो ताला आदि लगाने की जरूरत नहीं।

रात के समय आप बेफिक्र होकर सो जाएं, आपके माता-पिता जो हैं। वे स्वत: आहट, पदचाप का ख्याल रखेंगे। यदि आप दोनों कहीं सर्विस करते हो तो आपके बच्चों की दादी लोरियां देकर अपने पौत्रों-पोतियों को सुलायेगी। दादी की कहानियां बच्चों को अच्छी सीख देने वाली होती हैं।

थोड़ी-बहुत तकलीफ में दादी के नुस्खे तो डॉक्टर से अधिक काम कर जाते हैं। मां की भी बड़ी आशाएं अपने बच्चों पर होती हैं। मां बच्चे के जन्म से ही आस लगा लेती है कि बच्चा बड़ा होगा और मेरा सहारा बनेगा, मेरी डंगोरी पकड़ेगा। मां बहुत तीव्र आशा रखती है उस दिन की जब उसका पुत्र घर बहू लायेगा। वह न जाने कब से इस आशा में घोड़ियां (खुशी के गीत) गाने लग जाती है और मन ही मन खुशी मनाती रहती है। इन सभी बातों का पूरा-पूरा ख्याल रखते हुए बच्चों को भी अपने माता-पिता के प्रति कर्त्तव्यों का अहसास होना चाहिए और वे भी माता-पिता को पूरा सत्कार दें।

घर में जब कोई नया मेहमान आता है तो अपने साथ-साथ अपने मां-बाप का भी परिचय करायें। प्रात: काल काम पर जाने के समय और वापस आकर माता-पिता को माथा टेको। वे चाहे गुस्से में भी हों तो भी आपको आशीष देंगे। उनको सत्य श्री अकाल बुलाओ। आपको देखकर आपके बच्चे भी आपका अनुकरण करेंगे। कल को जब आप बूढ़े हो जाएंगे तो वे भी आपके साथ इसी प्रकार का व्यवहार करेंगे। बुढ़ापे में कई बीमारियां लग सकती हैं। आप ऐसी स्थिति में उनका दवा-दारू-उपचार तो करेंगे ही इसके साथ-साथ उनसे उनकी तबीयत के बारे में पूछ कर आप उनके मानसिक दुख को अवश्य सुख में बदल सकते हो। स्वयं रोटी खाने से पूर्व अपने बुजुर्गों को खिला लो तो इसमें भी आप उनका सत्कार कर रहे हो।

यदि आप ने कहीं आना-जाना हो तो अपने बुजुर्ग माता-पिता को बताकर जाओ कि हम इस काम पर चले हैं और हमको आने में इतना समय लग सकता है। ऐसा न हो कि आपकी प्रतीक्षा में उनका बुरा हाल हो जाए।

कोई चीज भी वनसाईडड नहीं होती। अत: माता-पिता के भी अपने बच्चों के प्रति कुछ कर्त्तव्य हैं। अपने बच्चों को अधिक से अधिक प्यार करो और कभी-कभी इस प्यार का

**२५५, अजीत नगर, श्री अमृतसर।*

अपने ढंग से कुछ प्रगटावा भी करो। बहू-रानी को अधिक से अधिक प्यार दो इसलिए कि वह अपना घर छोड़कर आपके घर आई है। उसको अपने बच्चों की भांति ही समझो। उसकी स्वाभाविक पितृ-चाह के प्रति कदापि अशुभ न बोलें। बहू के दहेज पर कभी भी कोई टिप्पणी न करो। 'दुलहन ही सबसे बड़ा दहेज है' का नारा सदैव सम्मुख और स्मरण रखो। यदि कहीं भूल-चूक से बहू से कोई नुकसान हो जाता है तो माथे पर सलवटें अथवा बल न डालें। वो भी घर की मालिक है! कभी बहू-पुत्र को उनके बच्चों के सामने न झिड़कें। बहू-पुत्र की लड़ाई में आप अपना हिस्सा न डालें। बहू को नीचा दिखाने के लिए उसकी निंदा ओस-पड़ोस में न करो। ओस-पड़ोस हमदर्द नहीं हो सकता बल्कि वो तो तमाशा देखेगा। दुख-सुख में तो आपके अपने ही काम आयेंगे। खाने-पीने के विषय में अधिक फरमाइशें न करो। बुढ़ापे में सादा खाना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।

इस नन्हें-से घर को स्वर्ग बनाने के लिए सारे परिवार को एक-दूसरे के लिए प्यार, सत्कार और सहानुभूति की जरूरत होती है। थोड़ी-सी सहन्शीलता रखें तो घर स्वर्ग बन सकता है।

कविता

क्या हुआ . . . ?

(अकृतघ्न संतान के हाथों बुजुर्गों के हो रहे घोर अपमान के प्रसंग में)

क्या हुआ तेरे पास आज कोठी हो गई, कार हो गई,
छूने से जो मैली होए, ऐसी सुंदर नार हो गई!
औलाद तेरी भी अब पढ़-लिख कर, अपने पैरों के भार हो गई,
उनके भी सुख से आगे, लालों की भरमार हो गई!
लेकिन ये सब रंग-तमाशे, सच समझ, बेकार हैं सारे,
यदि तेरी सोच हे सज्जन! रोगी और बीमार हो गई!
माता-पिता ही यदि गृह में, घूमते हों बेगानों जैसे,
दिल की इच्छा जिनकी बीबा, पाश-पाश, तार-तार हो गई!
पाला-पोसा, बड़ा किया और कठिन स्थिति में पढ़ाया तुझको,
ऐसी भी उनसे गलती, कौन-सी आखिरकार हो गई?
तेरी अल्ल-वलल्ली सुन-सुन, जो नहीं थे अकते-थकते,
उनकी आज बात भी सुननी, तेरे लिए बेजार हो गई!
घी की चूरी और ग़िज़ायें, मुंह भर-भर कर रहे खिलाते,
उनकी अब रूखी-सूखी भी तुझको कैसे भार हो गई?
कुत्ते-बिल्लियां चूमे-चाटे, दुनिया भर के लाड लडाये,
बुजुर्गों की पर शक्ल देखनी, तुझको है दुशवार हो गई।
'ओल्ड पीपल्ज होम' उनके लिए, जो आजकल तू फिरे ढूंढता,
घर से निकाल देने की लगता, तेरे पे धुन सवार हो गई।
लोगों की शोभा लेने को, पाठ कराये, लंगर लगाये,
मणके पर मणका खनकाना, तेरी नित्य की कार हो गई।
पर तुझ जैसे अकृतघ्नों को, मर कर भी मुक्ति नहीं मिलनी,
क्या हुआ अरदास भी तेरी, आज बीच दरबार हो गई!
'अरशी' प्रीतम के घर में तो, सच के ही निपटारे होंगे,
क्या हुआ जो यहां तेरी, खूब जय-जयकार हो गई?

-स. निरवैर सिंघ 'अरशी', मोहल्ला केसगढ़ साहिब, अनंदपुर साहिब (रोपड़)

माता-पिता की सेवा हमारा फर्ज

*-स. अवतार सिंघ**

आज इंसान इस कदर व्यस्त हो चुका है कि उसे अपने आस-पास के लोगों से कोई मतलब नहीं होता। काम की व्यस्तता इतनी बढ़ गयी है कि उसको किसी के दुख-सुख से कोई लेना-देना नहीं है। इंसान यह भी नहीं सोचता कि वो कहां से आया है, कैसे बड़ा हुआ है, कैसे उसका पालन-पोषण हुआ, कैसे इस लायक बना कि वह जिस काम में व्यस्त है उसे कर सके। सोचने की जरूरत है कि जो बचपन हमने बिताया वह कैसे बिताया?

जी हां, जवाब यही है कि हमें इस संसार में लाने वाले, हमारा पालन-पोषण करने वाले, लायक बनाने वाले हमारे माता-पिता हैं। माता-पिता जिन्होंने हमारा पालन-पोषण कर हमें इस लायक बनाया कि हम इस दुनिया में अपना भला-बुरा सोचने के साथ अच्छा जीवन जियें।

आज हमारी नई पीढ़ी बुजुर्ग माता-पिता को भूलती जा रही है, उन्हें बेकार की चीज समझकर वृद्ध आश्रम छोड़ आती है। जिस माता-पिता ने पाल-पोसकर बड़ा किया उनका अपमान कर हम वृद्ध आश्रम छोड़ आयें, क्या यही हमारा फर्ज है? जिस मां ने खुद गीले में सो कर रात बितायी और हमें सूखे में सुलाया, हमारे ऊपर अपनी ममता लुटाई, क्या उसके कर्मों का कर्ज हम उतार सकते हैं? जिस पिता ने हमें अंगुली पकड़कर चलना सिखाया, पैरों पर खड़ा किया, क्या उसके प्रति हमारा यही फर्ज है?

हमें यह सोचने की जरूरत है कि जिस माता-पिता ने हमें पाला, बड़ा किया उनको इस बुजुर्ग अवस्था में हमारे सहारे, मीठी बोली और सेवा की जरूरत है, जो करना हमारा फर्ज है। अगर हम अपने फर्ज से मुंह मोड़ेंगे तो क्या हमारे बच्चे हमारी सेवा करेंगे? क्या बच्चे हमें नहीं देखते कि हम क्या कर रहे हैं? जैसा बोयेंगे वैसा ही काटेंगे। अत: हमारा फर्ज बनता है कि हम अपने माता-पिता की सेवा करें। गुरबाणी में माता-पिता को परमात्मा के समान दर्जा दिया है :

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ (पन्ना २६२)

माता, पिता और गुरु का सम्मान तो हमेशा ही करना चाहिये। वैसे तो परम पिता परमात्मा हर जीव में हैं, माता-पिता भी उसका ही एक रूप हैं। माता-पिता की सेवा भी परमात्मा की सेवा है। अगर हम सच्चे मन से देखें तो माता-पिता में हमें उस परमात्मा का रूप नजर आयेगा :

--तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ (पन्ना ११)

--सभि महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई ॥ (पन्ना ९५४)

आज आवश्यकता है कि हम अपने फर्ज को न भूलें। जो फर्ज हमारे माता-पिता ने निभाया है उसे सोचें और उनके प्रति अपना भी फर्ज निभायें। उनकी सेवा से ही हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को सुधार सकते हैं। यदि हम अपने बुजुर्गों की सेवा करेंगे तो हमारे बच्चे भी हमारी सेवा करेंगे।

**सस्ता वस्त्र भंडार, नाका, रामनगर रोड, फैजाबाद (यू. पी.)-२२४००१*

गुरसिक्खी बारीक है--७

*-डॉ सत्येन्द्रपाल सिंघ**

एक श्रद्धावान सिक्ख का उत्साह अपने घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश और प्रतिदिन हुक्म लेने तक ही सीमित न रहे इसका विशेष ध्यान सिक्ख रहित मर्यादा में रखा गया है एवं उसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ सार्थक रूप से जुड़ने का मार्ग रखा गया है। सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार एक सिक्ख को श्री गुरु ग्रंथ साहिब का साधारण पाठ नियमित रूप से जारी रखना चाहिये और महीने-दो महीने, जितने भी समय में हो सके पाठ को सम्पन्न करना चाहिये। इसका भाव यह है कि प्रत्येक गुरसिक्ख का श्री गुरु ग्रंथ साहिब से जुड़ना एक रस्म की तरह बनकर न रह जाये, वह अपने मन, वचन और कर्म से शबद-गुरु को अपनाये। एक गुरसिक्ख अपने गुरु का अनुशासित सिक्ख बने। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रतिदिन प्रकाश करना, हुक्म लेना एवं साधारण पाठ एक सामान्य समयावधि में करना, अनुशासन से आत्मानुशासन में प्रेम के प्रभाव से परिवर्तित होता है। एक सच्चा सिक्ख शबद-गुरु के जितना अधिक निकट जाता है उतना ही उसके मन में शबद-गुरु के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है और उसे आनंद की प्राप्ति होने लगती है। जो रसना गुरबाणी का जितना अधिक उच्चारण करेगी, उसकी एकाग्रता उतनी ही बढ़ती जायेगी। भाई गुरदास जी कहते हैं कि एकाग्रचित्त प्रेम के द्वारा ही सिक्ख और गुरु के बीच की सारी दूरियां मिट जाती हैं और दोनों एकाकार हो जाते हैं:

पिरम पिआला साधसंग सबद सुरति अनहद लिव लाई।
धिआनी चंद चकोर गति अंम्रित द्रिसटि स्रिसटि वरसाई।
घनहर चात्रिक मोर जिउ अनहद धुनि सुणि पाइल पाई।
चरण कवल मकरंद रसि सुख संपुट हुइ भवरु समाई।
सुख सागर विचि मीन होइ गुरमुखि चालि न खोज खुजाई।
अपिओ पीअणु निझर झरण अजरु जरण न अलखु लखाई।
वीह इकीह उलंघि कै गुरसिख गुरमुखि सुख फलु पाई।
वाहिगुरू वडी वडिआई ॥८॥ (वार ११:८)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का साधारण पाठ किस अवस्था में किया जाये अथवा साधारण पाठ से कैसी अवस्था की प्राप्ति होती है, इसे जानने के लिये भाई गुरदास जी के उपरोक्त वचन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ प्रेम से सराबोर होकर अपने चित्त को पूरी तरह केन्द्रित करके किया जाये। गुरसिक्ख की एकाग्रता चकोर की तरह हो। जिस तरह पपीहा आसमान घिर आये घनघोर बादलों को देखकर मुदित होकर नाचने लगता है उसी तरह गुरसिक्ख शबद-गुरु के दर्शन मात्र से ही स्वयं को निहाल हुआ अनुभव करे। जो सम्बंध एक मछली का जल से होता है कि वह जल के बिना जीवित ही नहीं रह पाती वही सम्बंध गुरसिक्ख का शबद-गुरु से स्थापित हो जाये कि वह

***E-1716**, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९-६०५३३*

नियमत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ के बिना रह ही न सके और गुरबाणी से बरसते अमृत से ही अपनी प्यास शांत कर सके। इसे सजीव सम्बंध कहा जा सकता है जो सत् के मार्ग पर चलने की आवश्यक दशा है। शबद-गुरु से प्रवाहित होने वाला अमृत ही सिक्ख और गुरु के मध्य सम्बंध को सजीव बनाता है। इस अमृत को पाने के लिये ही तो जीव मनुष्य की देह धारण करके इस संसार में आया है :

जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंम्रितु गुर पाही पीउ ॥
छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इतु फलु नाही जीउ ॥
मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥
बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जीउ ॥ (पन्ना ५९८)

यह विचार समस्त दुविधाओं और शंकाओं से परे है कि परमात्मा से मेल शबद-गुरु में बसने वाले अमृत से ही संभव है। मनुष्य कुछ भी चतुराई कर ले, उपाय कर ले, कोई भी विधि अथवा ढंग अपना ले उससे दुख ही मिलता है। जो सारे सुखों का भंडार है और अमृत का स्रोत है वह शबद-गुरु तो हमारे पास में ही है। सारे अन्य उपाय त्याग कर स्थिर मति और स्थिर मन से शबद-गुरु की शरण में जाना चाहिये। मनुष्य का जन्म ही इसलिये हुआ है कि वह परमात्मा से प्रेम करते हुए अपने और परमात्मा के बीच की दूरी को मिटा कर उसकी कृपा प्राप्त करे।

इस दृष्टि से देखें तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करना जीवन के अन्य कर्मों जैसा एक अन्य कर्म नहीं वरन् जीवन का एक मात्र और मुख्य कर्म है जो जीव के वास्तविक उद्देश्य, परमात्मा से मिलन को प्राप्त करने में सहायक है। जीवन के अन्य कर्म तो आनुषांगिक कर्म हैं जिनसे मुख्य कर्म का निर्वाह करने की शक्ति और सामर्थ्य बनी रहती है। गुरबाणी के अनुसार शरीर के विभिन्न अंगों का सदुपयोग इस मुख्य कर्म--परमात्मा-मिलन में ही है :

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥१॥ (पन्ना ६९४)

चेतना की सार्थकता परमात्मा का ध्यान करने में है। आंखें उसे देखने के लिये हैं। कानों में सदैव परमात्मा की महिमा गूंजती रहे। मन सदैव भंवरे की तरह परमात्मा के चरणों में मंडराता रहे और जिह्वा पर परमात्मा का अमृत जैसा नाम ही बसा रहे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करने वाले गुरसिक्ख की चेतना पूरी तरह भटकाव आदि से विरत रहे, मन भंवरे की तरह शबद-गुरु के पास रहे। भाव यह कि सारी चिन्ताओं, कामनाओं, संशयों का त्याग करके ही पाठ किया जाना चाहिये। मन में यदि और विचार चल रहे होंगे, चिन्ताएं व्यग्र कर रही होंगी तो ऐसी स्थिति में किया गया पाठ किसी भी तरह फलदायी नहीं होगा, चाहे जितना और साल-दर-साल किया जाता रहे। पाठ करते समय दृष्टि पूरी तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब पर ही केन्द्रित हो और अपनी रसना से उच्चरित होने वाले शबद अपने कानों में भी समायें अर्थात् पाठ को पूरी तरह आत्मसात किया जाये। पाठ का उद्देश्य मात्र पढ़ना नहीं है इसीलिये रहित मर्यादा में साधारण पाठ की कोई निश्चित अवधि नहीं तय की गयी है। इसे सामान्यत: दो महीने में अथवा जितना समय लगे, उसमें पूरा किया जाना चाहिये। जब पूरी एकाग्रता से मन शबद-गुरु से जुड़ता है तो सारी दुविधाएं स्वयं ही दूर हो जाती हैं। परमात्मा के प्रेम में रमा हुआ मन साधारण पाठ करते हुए

ऐसा सुख पाता है कि स्वयं ही उस ओर खिंचता चला जाता है :

जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥
जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै ॥
त्रिखावंत जल पीवत ठंढा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥२॥
जिउ अंधिआरै दीपकु परगासा ॥
भरता चितवत पूरन आसा ॥
मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥३॥ *(पन्ना १००)*

जैसे एक बालक को खीर प्रिय है, निर्धन को धन का आकर्षण होता है, एक प्यासे को शीतल जल लुभाता है, वैसे ही एक गुरसिक्ख के मन में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन और पाठ की लालसा सदैव रहे, जीवन के अंधकार को दूर करने के लिये शबद-गुरु के प्रकाश का सहारा ले ताकि परमात्मा का मार्ग दिख सके। एक प्रेमी का मन जैसे अपने प्रियतम से मिलकर आनंद से भर जाता है वैसा ही आनंद एक गुरसिक्ख के मन में शबद-गुरु से जुड़ कर प्रकट होता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का साधारण पाठ करना एक गुरसिक्ख के जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, किन्तु इसे औपचारिकता की तरह निर्वाह करना उचित नहीं है। कई बार यह निर्धारित कर लिया जाता है कि पाठ कितने समय में पूर्ण करना है। इससे एकाग्रता भंग होती है, रस लुप्त हो जाता है और उद्देश्य भंग हो जाता है। किसने कितने पाठ सम्पूर्ण किये, इस चर्चा से भी विरत रहना चाहिये, क्योंकि इससे मन में अहंकार उत्पन्न होता है। अहंकार परमात्मा से दूर करता है। यह भी प्रचलित हो रहा है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब का साधारण पाठ घर में आरंभ किया जाता है और समाप्त होने से कुछ पहले पाठ रोक दिया जाता है और शेष पाठ गुरुद्वारे में ग्रंथी सिंघ द्वारा सम्पूर्ण करवाकर सम्पूर्णता की अरदास संगत में करायी जाती है। सिक्ख रहित मर्यादा ऐसी किसी परम्परा को मान्यता नहीं प्रदान करती है। साधारण पाठ के सम्बंध में दी गयी रहित मर्यादा का भाव यही निकलता है कि साधारण पाठ जिस गुरसिक्ख ने रखा है वही उसे सम्पूर्ण करेगा। इस सम्बंध में किसी खास विधि का उल्लेख नहीं किया गया है, जिसका तात्पर्य यही निकलता है कि इसे नितांत सहज स्वरूप प्रदान किया गया है जिसे कोई भी गुरसिक्ख सम्पन्न कर सके। सहजता और सरलता तो समूचे सिक्ख धर्म-दर्शन की विशेषता है जिसे भंग करने का कोई भी प्रयास पंथ-विरोधी है तथा भ्रम और भटकाव को प्रदर्शित करता है। आज आवश्यकता है कुप्रथाओं पर नजर रखने की जो रोके न जाने पर रूढ़ियों का रूप ले लेंगी और आने वाली पीढ़ियां उन्हीं में धर्म के तत्वों को ढूंढने लगेंगी। इस सम्बंध में एक अन्य रीति का उल्लेख आवश्यक है जिसके बारे में सारे संशय दूर होने चाहिये। गुरु साहिबान ने हमें "इक ओंअंकार" कह कर परमात्मा से परिचित कराया, परमात्मा के एकत्व की बात की, क्या उन गुरु साहिबान की बाणी में पड़ावों की कल्पना की जा सकती है। एक सिक्ख के लिये आदेश है कि गुरु को पूर्णता में देखे :

मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥
गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥
(पन्ना ४६)

सेवा वही सफल है जो गुरु के सम्पूर्ण स्वरूप की है। गुरु की सम्पूर्णता में ही प्राप्ति है:

पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥
करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नामु ॥
जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥१॥
(पन्ना ४६)

गुरु को जब सम्पूर्णता में देखते हैं तभी सहजता आती है और मन एकाग्र होता है। गुरु एक है और वह सम्पूर्ण भी है।

जनु नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥
गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥
उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥ (पन्ना ९६)

जब सिक्ख धर्म-दर्शन की सरलता तथा सहजता पर हमारी आस्था टिक जायेगी और इस पर हमें गर्व का अनुभव होने लगेगा तो स्वयं हमें मनगढ़त रीतियों, रस्मों की निरर्थकता समझ में आने लगेगी और सही दिशा दिखने लगेगी। सिक्ख रहित मर्यादा ही यह सही दिशा दिखा सकने में सक्षम है।

साधारण पाठ आरंभ करना अत्यन्त सरल है। सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार अनंद साहिब की पहली पांच पउड़ियां और अंतिम पउड़ी का पाठ करने के बाद अरदास करके हुक्म लेना चाहिए, फिर जपु साहिब का पाठ करना चाहिये। यही साधारण पाठ के आरंभ की विधि है।

जीवन का अंतिम पड़ाव : बुढ़ापा

(पृष्ठ २४ का शेष)

दुख सांझा नहीं करता अर्थात् वह अपना दुख किसके पास व्यक्त करे और पारिवारिक मामलों में तो उसकी कोई राय ही नहीं ली जाती। यदि पति या पत्नी का परस्पर साथ छूट चुका हो तो अकेलापन भी अधिकतर व्यर्थ की ऐसी नकारात्मक सोचों को जन्म देता है। व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा-सा हो जाता है। पारिवारिक सदस्य अपनी व्यस्तताओं के कारण हर बात बुजुर्गों के साथ सांझी नहीं कर सकते परंतु बुजुर्गों को उत्सुकता होती है कि उनको परिवार की हरेक बात के बारे में जानकारी हो। बुजुर्गों को जहां तक संभव हो पारिवारिक बातों से अलग-थलग न होने दिया जाए। परंतु दूसरी ओर बुजुर्गों को भी अपना समय धार्मिक, सामाजिक अथवा समाज-सेवा के कामों में लगाए रखना चाहिए। इस तरह वे अकेलेपन और फजूल के दरिद्र से छुटकारा पा सकते हैं। ऐसा व्यक्ति जो अपने आप को समाज-सेवी कामों में लगा कर रखता है वो समाज की तरफ से भी सम्मान-सत्कार पाता और अपनी अलग पहचान बनाता है। मानसिक तनाव से छुटकारा पाने के लिए व्यस्तता आवश्यक है। यदि बुजुर्ग व्यक्ति पारिवारिक जिम्मेदारियों को लगभग निभा चुका है भाव उसके बच्चे अपने-अपने रोजगार पर लगे हुए हैं और शादीशुदा हैं तो उसको अपना फालतू समय पढ़ने-लिखने, फोटोग्राफी और सैर-सपाटा जैसे शौक पालने पर लगाना अच्छा है। धार्मिक यात्रा भी इस स्थिति में आपको बहुत लाभ दे सकती है। इस प्रसंग में हमें पावन गुरबाणी के इस निर्मल उपदेश को सुनना समझना व अपनाना चाहिए :

गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥
सदा सदा हरि गुण रवहि अंतरि सहज धिआनु ॥
ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥
तिना नदरी इको आइआ सभु आतम रामु पछानु ॥ (पन्ना १४१८)

यदि बुजुर्ग व्यक्ति को बच्चों का साथ मिल जाए तो वह उनके साथ मानो बच्चा ही बन जाता है। इसी प्रकार जवानों के साथ वह जवान हो जाता है।

बुजुर्गों का सत्कार

-स. तरलोक सिंघ दीवाना*

जिंदगी की तीसरी, अवस्था बुढ़ापे वाली,
इसमें बुजुर्गों को खवार होना पड़ता है।
पूछ प्रतीत होती कम है बुजुर्गों की,
आयु के साथ बेरोजगार होना पड़ता है।
सुनने पड़ते हैं ताने, निहोरे बहू-बेटों के,
सह कर अपमान, शर्मसार होना पड़ता है।
भारत और इस जैसे, सभी ही मुल्कों में,
बेइज्जत, जलील व लाचार होना पड़ता है।
प्रभु करे आयु, अधिक हो तो हम पर,
पूरा माता-पिता का, अधिकार होना चाहिए।
जीते-जी न हों ये, उदास और खौफजदा,
इनका सम्मान-सत्कार होना चाहिए।
खून के रिश्तों का, खून भी सफेद हुआ,
मान-मर्यादा का न, रखते ख्याल हैं।
छोटी-मोटी खांसी यदि, लग जाए बीमारी कोई,
इनके सहित नाक को, चढ़ाते सभी बाल हैं।
रब न करे हो जाए, मौत कहीं अचनचेत,
रो-रो के कर लेते, यूं ही बुरा हाल हैं।
लोगों को दिखाने को, विवश ये तो लगते हैं,
रीति व रिवाजों को भी, करते विशाल हैं।
जिन बुजुर्गों ने, हमको जन्म दिया,
उनके न साथ यह विहार होना चाहिए।
सेवा माता-पिता की है सेवा सच्चे प्रभु की,
इनका सम्मान-सत्कार होना चाहिए।
पहली अक्तूबर को, विश्व बुजुर्ग दिन,
बुजुर्गों के ही मान में इसको मनाते हैं।
भारत में दस करोड़ है, गिनती इनकी,
बनी हुई सूची से, हिसाब यह लगाते हैं।
जीना जो चाहते हैं, होश व हवास संग,
हौंसला अधिकाधिक, उनका बढ़ाते हैं।
पर अफसोस कई, घरों में नालायक बेटे,
मंजी बूढ़े बाप की पशु कक्ष में लगाते हैं।
जिनके पास धन-सम्पदा बुजुर्गों की,
उनका तो हमको दीदार होना चाहिए।
इन्हीं से बसता जहान, हम सभी का ही
इनका सम्मान-सत्कार होना चाहिए।
समय पर रोटी ताजा, देते न जो खाने को,
न ही चाय-पानी सही समय पे पिलाते हैं।
जो हैं परिवार, खाते-पीते और अच्छे-भले,
वे भी वृद्ध-आश्रम में, वृद्ध छोड़ आते हैं।
अपनी औलाद के हैं, हाथों बुरे हाल वृद्ध,
फिर भी औलाद की, स्तुति बड़ी गाते हैं।
'मापे नहीं कुमापे हुंदे, पुत्त ही कपुत्त हुंदे',
जैसे भी व्यतीत होवे, वैसे ही बिताते हैं।
मां-बाप का तो कोई, देन ही न दे सके,
इस पर सोच व विचार होना चाहिए।
हमने भी होना है, बुजुर्ग जैसे ये हुए,
इनका सम्मान-सत्कार होना चाहिए।
क्या है फर्ज और, कैसे हैं निभाते हम,
फर्ज निभाने में, कोताही किये जाते हैं।
रब ने लगाई जो, ड्यूटी हम जान लें,
बनते नहीं बोझ कोई, यूं ही डरे जाते हैं।
वृद्धों को सताते हैं जो, सुख नहीं पाते कभी,
झोलियों को दुखों संग खूब भरे जाते हैं।
होते हैं वृद्ध कहते, ताला घर अपने का,
तोड़कर ताला काहे बाजी हरे जाते हैं?

*जोतीसर कॉलोनी, जंडियाला गुरु, जिला अमृतसर। मो: ९८५५५-२३१०९

इनकी महत्ता पर गांव-गांव, नगर-नगर,
जोर-शोर संग प्रचार होना चाहिए।
होते माता-पिता न जो, कहां होना हमने था?
इनका सम्मान-सत्कार होना चाहिए।
लोक-लाज, शर्म-हया, कहां चली जा रही,
चलन तहजीब का, क्यों गायब होता जा रहा?
शान माता-पिता से कहते हैं हमारी ऊंची,
ऊंचे-ऊंचे लोगों में यह ऐब आता जा रहा।

मीठे बोल गुम गए, कड़वे हैं आ गए।
गुस्सा, क्रोध मारू अजगैब, आता जा रहा।
छोड़ा जो मान-सम्मान बुजुर्गों का,
तो जीवन हमारे में, सैलाब आता जा रहा।
जहालतों ने डेरा डाला, कालिमों ने निवास किये।
उजाले हेतु कालिमों से पार होना चाहिए।
आंगन के वृक्षों की 'दीवाना' छाया लेनी है तो,
इनका सम्मान-सत्कार होना चाहिए।

गुरमति ज्ञान गरिमा

अज्ञानता मिटाने हेतु गुरु ग्रंथ साहिब पढ़ो नित्य,
गुरमति ज्ञान इसके भीतर विद्यमान है।
निर्धन बेसहारों के हैं सहारा व दीनबंधु,
जनक, पालक सिधि एके भगवान है।
ੴ सतिनामु करता पुरखु
निरंकार का यह सृष्टि प्रत्यक्ष प्रमाण है।
कहत 'महेश' कवि, पढ़ नित्य गुरु ग्रंथ साहिब,
संतन अमर बाणी, गुरु ग्रंथ जी प्राण हैं।

गुरु साहिबान ने जो गुरमति ज्ञान दिया,
तत्व-सार दिये हमें नूरी प्रकाश के।
ऊंच-नीच खाई पाटी, करी सब एक जाति,
भेदभाव दूर किये, संसे अभिलाष के।
पंगत लगाई एक, जग से मिटाई छूत,
प्रीत प्रतीत दिये, मिलन हुलास के।
इक धरती के लाल, हम भाई सांझीवाल,
बराबर बाशिंदे हम धरती आकाश के।

-श्री महेश्वर ओझा 'महेश', साकेत भवत, सिविल लाइन, दुर्गा टाकीज से सटे, बक्सर (बिहार)-८०२१०१

कौन बड़ा?

बड़ा मैं नहीं, बड़े तुम हो।
जो गुण हैं, तुम्हारे दिये हैं।
जो अवगुण हैं, मैंने इकट्ठे किये हैं।
कृपा करो,
रह जायें गुण . . . विकसें,
जो अवगुण हैं . . . हटें . . . बिसरें।

उम्र बढ़ रही जैसे-जैसे,
दुर्गुण झरें . . . निकसें।
नष्ट हो जायें, एक न बचे।
ताकि जब पहुंचूं, गुण ही गुण हों।
जैसे हैं तुम्हारे, गुण ही गुणों से रच जायें।

-स. जसबीर सिंघ, १२३/१, सेक्टर-५५, मोहाली-१६००५५

सत्य-दर्शन

अज्ञान अंधकार से ही नहीं,
सांसारिक ज्ञान प्रकाश से भी ऊपर उठना है।
जब दोनों के ऊपर चली जाती है चेतना,
तभी द्वैत के ऊपर होता प्रारंभ अद्वैत का,
तभी उस सत्य का होता दर्शन,
जो सदा द्वैत के पार है।

-बीबा जसप्रीत कौर 'जस्सी', ८३-बसंत विहार, जवद्दी रोड, डुगरी, लुधियाना। मो: ०९३५६६३०५२२

गुरबाणी राग परिचय : २४

करणी उपरि होवगि सार – राग बसंत

*–स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग बसंत की बाणी राग भैरउ के बाद क्रमांक २५ पर २९ पन्नों में (पन्ना ११६८–११९६) अंकित है। राग माला में छ: प्रमुख रागों में हिंडोल राग की गणना राग भैरउ और राग माला कउस के बाद की गई है। गुरमति संगीत में राग बसंत, हिंडोल राग का पुत्र है। हिंडोल राग के पुत्रों की गणना एक चौपई में सुंदरतापूर्वक की गई है : *"असट पुत्र मै कहे सवारी ॥"*। चौपई की चतुर्थ पंक्ति में सरस राग बसंत राग हिंडोल और राग मालकउस के मिलन से बनता है। बसंत राग औढव संपूर्ण है। इसके आरोह में ऋषभ और पंचम वर्जित है और अवरोह में सभी स्वर लगते हैं। यह राग रात के पिछले प्रहर का है तथा इसका गायन बसंत ऋतु में किया जाता है।

राग बसंत के शबदों में विचारों का संपादन बहुत सुंदर है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम राग सिरीरागु में १०० शबद हैं, जिनमें गुरु नानक साहिब, श्री गुरु अमरदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी के शबदों के विषमक्रम में सुंदर, विकास और समानता है। उसी प्रकार राग बसंत में ६३ शबद हैं जिनमें उक्त तीन गुरु साहिबान के क्रमश: १०, २० तथा २१ शबद हैं, जिनमें वर्णन विषय सुंदर रूप से संजोया गया है।

राग बसंत के शबदों का वर्णन विषय है: प्रभु-मिलन का आनंद। प्रभु-मिलन के तीन अंग माने गये हैं--प्रभु की कृपा, गुरु का मार्गदर्शन, सिक्ख या साधक के सत्कर्म। ये तीनों अंग एक-दूसरे के सहारे पर टिके हैं तथा इनका व्यवहार अनुभव पर आधारित है। प्रभु-मिलन की ऋतु बसंत के उत्साह और आनंद का वर्णन किया है। लौकिक ऋतुएं और महीने तो आने-जाने वाले हैं। प्रभु-मिलन की युक्ति प्रभु से ही मिलेगी *"जगजीवन जुगति न मिलै काइ ॥"* यह युक्ति किसी अन्य स्थान से नहीं मिलती।

गुरु नानक साहिब मिलन-युक्ति का परिचय अगले आठ शबदों में देते हैं। प्रथम स्थान सत्कर्मों को दिया गया है : *"करणी उपरि होवगि सार ॥"* इस करणी में कर्मकांड का आडंबर नहीं है। इस करणी का लक्ष्य सत्य प्रभु के नाम में अनुरक्त होना है :

रे मन लेखै कबहू न पाइ ॥
जामि न भीजै साच नाइ ॥ (पन्ना ११६९)

गुरु नानक साहिब के शबद क्रमांक ३ के बाद भाव साम्य के आधार पर कर्मकांड के आडंबर की भर्त्सना सम्बंधी श्री गुरु अमरदास जी का शबद है कि यदि हृदय में मैल है तो मैल रहित निर्मल प्रभु कैसे मिल सकता है?

जो को ऐसा संजमी होइ ॥
क्रिआ विसेख पूजा करेइ ॥
अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि ॥
ओइ निरंजनु कैसे पाहि ॥ (पन्ना ११६९)

सत्कर्मों की प्रेरणा गुरु से मिलती है। शबद क्रमांक ५ से ७ तक गुरु-महिमा का वर्णन है। गुरु की चरण-सेवा से ही हरि-नाम मिलता है : *"हरि नामु मिलै गुर चरन सेव ॥" (शबद ५)* गुरु के सतसंग से राम राइ (प्रभु) के दर्शन

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६ (यू पी)*

होते हैं : *"गुरि संगि दिखाइओ राम राइ ॥"* गुरु के सिक्ख गुरु के चरणों की सेवा करते हैं। गुरु-सेवा से अपने-पराये का भेद-भाव त्याग कर उद्धार हो जाता है। गुरसिक्ख दिन-रात नाम-सिमरन में लीन रहते हैं। गुरु सिक्ख को पास बैठाकर नाम की दात देता है :

गुर चरन सरेवहि गुरसिख तोर ॥
गुर सेव तरे तजि मेर तोर ॥ . . .
गुरु मेलि मिलावै करे दाति ॥
गुरसिख पिआरे दिनसु राति ॥ (पन्ना ११७०)

गुरु के मार्गदर्शन के साथ ही प्रभु की कृपा का आधार प्रभु-मिलन के लिए आवश्यक है। प्रभु-भक्ति प्रभु-कृपा से ही मिलती है : *"साहिब भावै सेवकु सेवा करै ॥"(श्री गुरु अमरदास जी)*

श्री गुरु नानक देव जी के शबदों का द्वितीय खंड राग बसंत हिंडोल के अन्तर्गत है। इन शबदों की शैली पहले सात शबदों से भिन्न है और चौपई के स्थान पर लंबे मात्रिक छंद हैं। शबद क्रमांक ९ में *"करणी उपरि होवगि सार"* को सुक्रित करणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सदा चरण ही तुलसी माला है *"सुक्रितु तुलसी माला"*। इसे कृषि के रूपक का अनुसरण करते हुए स्पष्ट किया गया है। प्रभु जगत-बाग का माली है। उसका प्रिय बनने के लिए अपने हाथों से सेवा करने को रहट बनाओ। रहट में अपना मन जोत कर नाम-जल से ज्ञानेन्द्रियों की क्यारियों को भरो। अपनी देह रूपी पृथ्वी की गुड़ाई करो। दैवी गुणों की स्नेह से रक्षा करना और विकारों को क्रोध से उखाड़ना प्रेम और क्रोध के खुरपों का रूप हैं। ज्यों-ज्यों गुड़ाई करोगे सुख पाओगे। तुम्हारे द्वारा की गई यह करणी नष्ट नहीं होगी :

कर हरिहट माल टिंड परोवहु तिसु भीतरि मनु जोवहु ॥
अंम्रितु सिंचहु भरहु किआरे तउ माली के होवहु ॥
कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई ॥
जिउ गोडहु तिउ तुम्ह सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई ॥ (पन्ना ११७१)

सुक्रितु करणी का दूसरा रूप पतिव्रता नारी या गुरमुख जीव-स्त्री का है। प्रभु-पति से मिली दात को जीव-स्त्री भूल जाती है और माया के प्रभाव से उसमें मेरे-तेरे का भाव आ जाता है। कर्मों में कुशलता कसीदा करना या चित्रकारी है। शुभ गुणों के आवरण से युक्त प्रेम से नारी पति को अच्छी लगती है। विकारों से रहित नारी घर को संभाल कर रखती है और प्रियतम का प्रेम प्राप्त करती है :

कढि कसीदा पहिरहि चोली तां तुम्ह जाणहु नारी ॥
जे घरु राखहि बुरा न चाखहि होवहि कंत पिआरी ॥ (पन्ना ११७१)

प्राण-पति से मिलने के मार्ग का वर्णन करते हुए गुरु नानक साहिब पंडित से संवाद रचाते हैं। साधक को चाहिए कि अविद्या को नष्ट करे और क्षमा को अपनाए। डावांडोल मन को स्थिर करना चाहिए :

राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ ॥
ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ ॥
(पन्ना ११७१)

सुक्रित करणी, गुरु-मार्ग-निर्देशन तथा प्रभु-कृपा तीनों अंगों का समाहार गुरु नानक साहिब के राग बसंत के अंतिम शबद में भक्ति के रूप में किया गया है। सतसंग और हरि-नाम, प्रभु-कृपा से मिलते हैं। भक्ति के बिना सतिगुरु नहीं मिलते। भक्ति भी उसी भाग्यवान को मिलती है जिस पर प्रभु की कृपा हो। इस प्रकार प्रभु-कृपा शीर्ष स्थान पर है। हरि-नाम का सच्चा व्यापारी गुरु है। गुरु की शरण में आये संतों को वह सभी में दिखाई देने लगता है। संत-जन सदा हरि-नाम का जाप करते हैं। गुरु के द्वारा बढ़ाई मिलने पर प्रभु से सम्मान मिलता है।

गुरु-रूपी पारस को पाकर भक्त-जन स्वयं भी पारस बन जाते हैं तथा वे हरि और गुरु के साथी बन जाते हैं :

बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी ॥
बिनु भागा सतसंतु न पाईऐ करमि मिलै हरि नामु हरी ॥
घटि घटि गुपतु उपाए वेखै परगटु गुरमुखि संत जना ॥
हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने हरि जलु अंम्रित नामु मना ॥
जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरमुखि से परधान कीए ॥
पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुर संगि थीए ॥ (पन्ना ११७१-७२)

राग बसंत में श्री गुरु अमरदास जी के दो शबद गुरु नानक साहिब के शबदों के क्रम में क्रमांक ४ और ८ पर हैं। शेष १८ शबद महला ३ के अन्तर्गत क्रम से हैं। गुरु नानक साहिब के शबद की भांति पहला शबद बसंत ऋतु के उल्लास सम्बंधी है। बसंत अथवा अन्य ऋतुओं का उल्लास प्रभु की उपस्थिति से है, जिससे सभी प्राणवान है :

माहा रुती महि सद बसंतु ॥
जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥ (पन्ना ११७२)

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरु-शबद-महिमा और भक्ति का विशद वर्णन किया है :

भगति करे सद वेखै हजूरि ॥
मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥
इसु भगती का कोई जाणै भेउ ॥
सभु मेरा प्रभु आतम देउ ॥ (पन्ना ११७३)

प्रभु भक्त-वत्सल है। परमात्मा की भक्ति करने वाले भक्त सदा प्रभु के द्वार पर शोभा पाते हैं। वे गुरु और सत्य-स्वरूप प्रभु के प्रेम में लीन रहते हैं :

भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥
गुर कै हेति साचै प्रेम पिआरि ॥ (पन्ना ११७३)

गुरु के उपदेश से प्रभु के दर की पहचान होती है और सत्य-स्वरूप प्रभु की भक्ति से प्रभु-मिलन होता है। हरि-नाम में रंग कर प्रभु के द्वार पर शोभा होती है तथा मनुष्य अपनी आत्मा में स्थित प्रभु के निवास में टिकाव अनुभव करता है :

साचा सेवहु साचु पछाणै ॥
गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥
दरि साचै सचु सोभा होइ ॥
निज घरि वासा पावै सोइ ॥ (पन्ना ११७४-७५)

सूक्ति के रूप में साधना का निष्कर्ष निम्न पंक्ति में है :

एकु नामु तारे संसारु ॥
गुर परसादी नाम पिआरु ॥ (पन्ना ११७५)

चार चरणों के पदों के (दुतुके) शबदों के बाद पांच शबद दो चरणों (एक पंक्ति) के (इकतुके) पदों वाले हैं। इनमें बसंत राग के उल्लास का सरस वर्णन है :

बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥
इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥ (पन्ना ११७६)
बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥
एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥
(पन्ना ११७६)

श्री गुरु अमरदास जी के इकतुके संक्षिप्त शबदों के बाद समापन रूप में बसंत हिंडोल राग में दो पंक्तियों के लंबे मात्रिक छंद से युक्त पदों का शबद अंकित है, जिसमें गुरबाणी पर बलिहार होने का वर्णन है। प्रभु से मिलन गुरु-उपदेश (शबद) से होगा :

आपि कराए करे आपि भाई जिनि हरिआ कीआ सभु कोइ ॥
नानक मनि तनि सुखु सद वसै भाई सबदि मिलावा होइ ॥ (पन्ना ११७७)

राग बसंत में श्री गुरु रामदास जी के सात शबद हैं। प्रथम शबद प्रभु के सर्वव्यापक स्वरूप से सम्बंधित है। श्री गुरु रामदास जी ने गुरु नानक साहिब और श्री गुरु अमरदास जी की भांति प्रभु के प्रतीक को बसंत के आनंद से नहीं जोड़ा, उन्होंने सूरज की किरण के समान प्रकाश या ज्योति के रूप में व्यापक होने का उल्लेख किया है :

जिउ पसरी सूरज किरणि जोति ॥
तिउ घटि घटि रमईआ ओति पोति ॥
(पन्ना ११७७)

प्रभु-मिलन के वर्णन में राग बसंत हिंडोल के प्रथम शबद में हरि-नाम की तुलना किले में रखे एक सुंदर रत्न से की गई है। प्रभु-नाम का भंडार शरीर रूपी किले में हमारे हृदय की कोठरी में गुप्त रूप से विद्यमान है। सतिगुरु मिलने से इस ज्योति की खोज की जा सकती है। हे पति प्रभु! मुझे साधु-जनों से मिला दो ताकि उनके दर्शन से सब पापों का नाश हो और परम पद मिल जावे :

राम नामु रतन कोठड़ी गड़ मंदरि एक लुकानी ॥
सतिगुरु मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी ॥१॥
माधो साधू जन देहु मिलाइ ॥
देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र परम पदु पाइ ॥ *(पन्ना ११७८)*

श्री गुरु रामदास जी के राग बसंत हिंडोल शबदों में उक्त शबद तथा शबद क्रमांक ४ के तुकांत में सामान्य भाषा का प्रयोग है। शबद क्रमांक २ में देश-भाषा का 'छे' प्रत्यय (दिनछे= देना, मिलछे= मिलना आदि) तथा क्रमांक ४ में 'धे' प्रत्यय (सुकलीधे = सूख गये, पवीधे = पड़ता हूं आदि) का प्रयोग किया गया है। शबद क्रमांक ५ में संस्कृत क्रिया शब्दों में से अंतिम वर्ण 'च', 'ज' को छोड़कर शब्द बनाये गये हैं जैसे 'मुञ्च' = छोड़ना से 'मुंञु', 'भुञ्च' = 'खाना' से 'भुंञु', 'भञ्ज' = तोड़ना = 'भंञु', 'सलुंञ्ज' = 'पल्ला' = 'सलुंञु'।

बसंत ऋतु के उल्लास की कड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी के शबद आत्मिक रस से परिपूर्ण हैं। प्रथम शबद में प्रभु-मिलन के आनंद में हृदय बसंत का रूप मूर्तिमान हो गया है। संतों की सेवा ने होली का रूप धारण कर लिया है। "अहंकार-त्याग से हरि-नाम की शाखाएं विगास प्राप्त करती हैं, धार्मिक ज्ञान के फूल तथा प्रभु-ज्ञान के फल वाले पेड़ के पत्तों की छाया घनी होती है।" गुरु नानक पातशाह द्वारा वर्णित पेड़ श्री गुरु अरजन देव जी के शबद में पारिजात कल्प वृक्ष का रूप ले लेता है जिस पर सुंदर फूल और फल रत्नों की भांति लगे हैं। साधक हरि-गुण गाकर तथा नाम-स्मरण कर तृप्त हो जाते हैं:

आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥
गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥ . . .
त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥
जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥
(पन्ना ११८०)

श्री गुरु अरजन देव जी के शबदों के प्रथम भाग में १३ दो-तुके शबद हैं। द्वितीय भाग में ५ एक-तुके शबद हैं। अंत में तीन शबद बसंतु हिंडोल राग में हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी के द्वितीय शबद में हरि-नाम की महिमा का वर्णन है। यह निधि गुरु की कृपा से मिलती है। सभी लौकिक आस्वादन प्रभु के नाम में निहित हैं। शबद के प्रथम तीन चरणों में तीन-तीन दृष्टांत है। अंत में निष्कर्ष है। दृष्टांत लौकिक जीवन के विविध पक्षों को प्रस्तुत करते हैं। नशा करने वाला नशे से, जुआरी जुए से, कृपण धन से, दुकानदार व्यापार के सामान में रुचि रखता है; वीर

व्यक्ति युद्ध के लिए और शेर मांस के शिकार के लिए उत्सुक रहते हैं। प्रकृति के मनोरम रूप में मोर मेघ को देखकर नाचता है तथा कमुदिनी चन्द्रमा को देखकर खिलती है। मानव-जीवन के कोमल भाव से पूर्ण मां बच्चे को देखकर आनंदित होती है। हरि-जन गोबिंद का जाप कर आनंदित होते हैं :

मेघ समै मोर निरतिकार ॥
चंद देखि बिगसहि कउलार ॥
माता बारिक देखि अनंद ॥
तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद ॥ (पन्ना ११८०)

राग बसंत में श्री गुरु तेग बहादर जी के ५ शबद हैं। इन शबदों में गुरु जी ने प्रभु से नाम-याचना की है: *"दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥"* यह संसार धुएं का पहाड़ है। तू इसे क्या समझकर सच मान बैठा है? हे मन! तू प्रभु का नाम क्यों विस्मृत कर बैठा है? नामहीन होने पर, शरीर के नष्ट होने के बाद यमराज से सामना करना पड़ता है। धन, स्त्री, जायदाद, घर कोई भी चीज साथ नहीं जाती। केवल परमात्मा की भक्ति ही साथ रहती है। अत: केवल प्रभु-प्रेम में मग्न रह कर उसका स्मरण कर :

मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥
तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥रहाउ॥
इहु जगु धूए का पहार ॥
तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥१॥
धनु दारा संपति ग्रेह ॥
कछु संगि न चालै समझु लेह ॥२॥
इक भगति नाराइन होइ संगि ॥
कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥
(पन्ना ११८६-८७)

राग बसंत में अष्टपदियों में भी शबदों की भांति पहले दो-तुकी, फिर इक-तुकी और अंत में बसंत हिंडोल में गायन की अष्टपदियां हैं। गुरु नानक साहिब की प्रथम अष्टपदी में तत्कालीन सामाजिक दशा का चित्रण है। सन्दर्भ के अनुसार इस अष्टपदी का उच्चारण आसाम (कामरूप) की यात्रा (उदासी) के समय हुआ। गुरु नानक साहिब के चरित्र की परख के लिए जादू के देश कामरूप में कुछ महिलायें उपस्थित हुईं। गुरु नानक साहिब ने उन्हें नाम-भजन का उपदेश दिया : *"गाछहु पुत्री राज कुआरि ॥"* जो जीव-स्त्री भड़कीले कपड़े पहनती है, अत्यधिक श्रृंगार करती है, उसका रूप उसे विकारों की ओर प्रेरित करता है। आशाएं और इच्छाएं उसके लिए प्रभु का द्वार बंद कर देती हैं। नाम के बिना इंसान का गृहस्थ जीवन सूना है :

कापड़ु पहिरसि अधिकु सीगारु ॥
माटी फूली रूपु बिकारु ॥
आसा मनसा बांधो बारु ॥
नाम बिना सूना घरु बारु ॥ (पन्ना ११८७)

गुरु नानक साहिब ने दूसरी अष्टपदी में मन को सहज भाव से गुरु-उपदेश के विचार द्वारा सच्चे नाम को ग्रहण करने का उपदेश दिया है। मन कभी तो सूंघने के विकार से ग्रसित होकर भंवरे की तरह भटकता है, कभी काम-वासना में ग्रसित हो हाथी के समान अंकुश की मार सहता है। मन में स्थिरता नहीं है। स्वाद के लिए मछली के समान उसके कंठ में लोहे का हुक फंस जाता है। निष्ठुर है मनुष्य के भाग्य की विडंबना! प्रभु स्वयं ही भुलाने वाला हो तो शिकायत किससे की जावे? सतिगुर मिलने से मति उत्तम होगी। अहंकार दूर होने से सदा के लिए बंधन से मुक्ति मिल जाएगी। प्रभु का हुक्म समझने पर मन का भ्रम दूर हो जाएगा। सुख-दुख प्रभु की रजा से होते हैं।

प्रभु का स्वरूप भूलों की सीमा में नहीं है। गुरु के शबद को ग्रहण करने से मति अगाध होगी, तब प्रभु के स्वभाव का अनुभव होता है। प्रभु गुरु के शबद में समाया है। सत्य प्रभु की

स्तुति से मन आत्मस्थ हो गया है :
तू अभुलु न भूलौ कदे नाहि ॥
गुर सबदु सुणाए मति अगाहि ॥
तू मोटउ ठाकुरु सबद माहि ॥
मनु नानक मानिआ सचु सलाहि ॥ (पन्ना ११८८)

गुरु नानक साहिब की तृतीय अष्टपदी प्रभु की एकत्व भावना को समर्पित है। जिस आदमी को प्रभु के दर्शन की प्यास है उसे द्वैत-भावना छोड़कर एक प्रभु की शरण लेनी चाहिए।

चौथी अष्टपदी में चंचल मन को पुन: सम्बोधित किया गया है। चंचल मन एक पल भी स्थिर नहीं होता। गुरु अपने उपदेश द्वारा हरि-नाम की औषधि देता है; गुरु, हृदय में स्थित प्रभु का दर्शन कराता है तो मन स्थिर हो जाता है। मन में उन्मन दशा में प्रभु का दर्शन होता है और चित्त की सूक्ष्म चेतना का अनुभव होता है :
घर महि घरु जो देखि दिखावै ॥
गुर महली सो महलि बुलावै ॥
मन महि मनूआ चित महि चीता ॥
ऐसे हरि के लोग अतीता ॥ (पन्ना ११८९)

गुरु नानक साहिब की प्रथम अष्टपदी में आसाम सन्दर्भ का उल्लेख किया जा चुका है। अंतिम अष्टपदी में इस्लामिक सभ्यता के प्रभाव का वर्णन है। मुस्लिम शासन में निरंकार 'आदि पुरुष' को अल्लाह कहा जा रहा है। प्रभु की बंदगी करने वालों ने नीला बाणा धारण किया हुआ है। अब तेरे भक्तों की बोली भी अलग हो गई है और सभी घरों में 'मियां' शब्द प्रधान है। हे प्रभु! यदि तुम इस्लामी राज्य चाहते हो तो हम जीवों के वश में क्या है? हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार पूजा-पाठ से नाम मात्र का लाभ मजदूरी तुल्य है। यदि कोई प्रभु का नाम एक घड़ी (२४ मिनट) भी लेता है तो उसे आदर-सत्कार मिलता है।

अष्टपदियों में श्री गुरु रामदास जी की एक तथा श्री गुरु अरजन देव जी की दो अष्टपदियां है। श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रथम अष्टपदी में मन को गुरु से प्रभु की साखी सुनने का आग्रह किया है। साखी सुनकर प्रभु का स्मरण करना चाहिए। इस अष्टपदी के पहले चार पदों में नाम लेकर मुक्त हुए प्राचीन लोक-परंपरा की स्मृति का अंग बन चुके पात्र ध्रुव, वाल्मीकि, गजराज, सुदामा, द्रौपदी, गणिका और अजामल का उल्लेख है और अगले चार पदों में तत्कालीन भक्तों का सन्दर्भ है जिनकी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है। अंतिम पद में तीन मुख्य भक्तों का उल्लेख है :
कबीरि धिआइओ एक रंग ॥
नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥
रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥
गुर नानक देव गोविंद रूप ॥ (पन्ना ११९२)

राग बसंत में शबदों और अष्टपदियों के बाद श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित पउड़ी छंद के तीन पदों की इकाई को 'बसंत की वार' शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है। प्रभु की कृपा से हरि-नाम-स्मरण की दात प्राप्त होती है जिससे बसंत ऋतु की हरियाली का आनंद मिलता है। मनुष्य का प्रत्येक अंग प्रकृति के तृण-तृण के समान खिल उठता है :
हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥
करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥
वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥
(पन्ना ११९३)

राग बसंत में चार महत्त्वपूर्ण भक्त साहिबान की बाणी संकलित है--भक्त रामानंद जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी और भक्त कबीर जी। भक्त रामानंद जी का एक मात्र शबद *"कत जाईऐ रे घर लागो रंगु"* इसी राग में है। प्रभु-मिलन के लिए कहीं जाने की

आवश्यकता नहीं है, प्रभु सर्वव्यापक है, उसे अन्य जगह तो तब ढूंढा जाए जब वह हृदय में न हो! भक्त रामानंद जी का स्वामी सभी में रमण करने वाला ब्रह्म है। गुरु के शबद ने बाहरी पूजा के करोड़ों कर्मों का नाश कर दिया है।

भक्त नामदेव जी के तीन शबद हैं। प्रथम शबद में सेवक की अनन्य भक्ति का प्रतिपादन है। द्वितीय शबद में उद्धार के लिए पिता तुल्य विट्ठल के प्रति प्रार्थना है। भक्त नामदेव जी कथन करते हैं कि मैं न तो नाव खेना जानता हूं और न तैरना। विट्ठल मेरी बांह पकड़ कर संसार समुद्र के आवागमन से पार करा सकते हैं। तृतीय शबद में मानव-जीवन को धोबी के वस्त्र धोने के रूपक में प्रस्तुत किया गया है। धोबी गुरु के रूप में है, मैल से भरे कपड़े लादे हुए शरीर मानव-जीवन की गाड़ी को लेकर धीरे-धीरे चल रहा है। गुरु द्वारा मैल दूर होने पर मन प्रभु-चरणों में टिकेगा। भक्त प्रभु की दया का पात्र बन जावेगा।

भक्त रविदास जी अहंकार से पूर्ण काया को सावधान करते हैं। रूपवती काया अपने बाहरी आवरण के सौन्दर्य में मस्त है। उसे अपना मरण भूल गया है। मूर्ख काया भादों महीने में पैदा होने वाले कुकुरमुत्ते (खुंब) के समान शीघ्र नष्ट होने वाली है। जीव अपने कर्मों के लिए प्रभु के प्रति उत्तरदायी है। उसके दुख पत्नी या पुत्र दूर नहीं कर सकते। मरने के बाद किसे प्रीतम कहकर पुकारेगी? गुरु की ओट लेने से नाम-साधना से मनुष्य जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है।

राग बसंत में भक्त-बाणी के आरंभ में भक्त कबीर जी के सात शबद हैं। प्रथम शबद इस राग के मुख्य विषय प्रभु की व्यापकता तथा प्रकृति के आह्लाद पर केन्द्रित है। चतुर्थ शबद में प्रहलाद का प्रसंग दिया गया है। परम पुरख सभी देवताओं के देवता हैं। उन्होंने भक्त हेतु नरसिंघ का रूप धारण किया और भक्त प्रहलाद को अनेक कष्टों से बचाया।

राग बसंत के समापन के लिए भक्त कबीर जी के तीखे विवेकपूर्ण पद का चयन किया गया है। जीवन की सार्थकता सत्कर्मों पर निर्भर है : *"करणी उपरि होवगि सार ॥"* प्रभु की रजा में रहकर नाम-साधना और सेवा सत्कर्म हैं। संसार के कार्य करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे मार्ग से विचलित होने पर कोई हम पर नैतिक या शारीरिक प्रहार न कर पावे।

हे कुत्ते के स्वभाव वाले जीव! तेरी चाल गाय जैसी है। तेरी पूंछ पर बाल भी सुंदर हैं। इधर-उधर घूमना छोड़कर जो कुछ तेरी मेहनत की कमाई है उसे नि:संग होकर उपयोग कर। तू चाटता है और आटा खाता है, लेकिन जाते समय चीथड़ा कहां ले जाएगा? तेरी दृष्टि छीके पर अटकी है। देखना! कहीं तेरी पीठ पर कोई लाठी या डंडे से प्रहार न कर दे!

सुरह की जैसी तेरी चाल ॥
तेरी पूंछट ऊपरि झमक बाल ॥१॥
इस घर महि है सु तू ढूंढि खाहि ॥
अउर किस ही के तू मति ही जाहि ॥१॥रहाउ॥
चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥
चाकी का चीथरा कहां लै जाहि ॥२॥
छीके पर तेरी बहुतु डीठि ॥
मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥३॥
कहि कबीर भोग भले कीन ॥
मति कोऊ मारै ईंट ढेम ॥४॥ *(पन्ना ११९६)*

गुरबाणी चिंतनधारा : ३८

रहरासि साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

आसा महला ४ ॥
तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥रहाउ॥

आसा राग में उच्चारण किया गया चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी का यह पावन शबद है।

गुरु पातशाह जी का पावन फरमान है कि हे प्रभु! तू सबको पैदा करने वाला है, सबका सृजनकर्त्ता है, सदैव कायम रहने वाला सत्य-स्वरूप है, मेरा मालिक (स्वामी) है। जो कुछ भी तुझे अच्छा लगता है दुनिया में वही कुछ होता है और सदैव वही होगा जो तुझे भाता है। अर्थात् तेरे हुक्म में ही सब कुछ हो रहा है और भविष्य में भी होगा। अपने हुक्म में जो कुछ भी तू मुझे बख्शता है हे प्रभु! मैं वही कुछ ही तो प्राप्त कर सकता हूं अर्थात् मैं अपनी मर्जी से कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। जो कुछ तू देता है मैं केवल वही कुछ प्राप्त कर सकता हूं।

सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥
जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥

हे अकाल पुरख! सारी रचना तेरे द्वारा निर्मित है अर्थात् सारी सृष्टि तूने ही बनाई है। सारे जीव तेरी ही आराधना करते हैं, सारी रचना तेरा ही गुणगान करती है। जिस पर तेरी कृपा-दृष्टि हो जाती है वह तेरी मेहर से ही तेरा अमोलक रत्नों जैसा कीमती नाम प्राप्त करता है। नाम से बड़ा कोई अनमोल पदार्थ इस दुनिया में नहीं है और जिसे यह नाम रूपी धन प्राप्त हो जाता है उसे किसी भी तरह की कोई कमी नहीं रह जाती।

गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥

गुरदेव सतिगुरु के महत्व को दर्शाते हुए स्पष्ट करते हैं कि 'गुरमुख' अर्थात् 'गुरु की ओर मुख है जिनका'। अंत वे जीव जो सदैव गुरु के सन्मुख रहते हैं, गुरु की आज्ञा को हमेशा मानते हैं, उन्होंने ही नाम-रत्न पा लिया। 'मनमुख' अर्थात् 'मन की ओर मुख है जिनका'। जो जीव हमेशा अपने मन के पीछे भागते हैं, गुरु के सन्मुख नहीं हैं, उन्होंने अपना सब कुछ गंवा लिया, परन्तु जीव (बिचारे) के क्या वश? अर्थात् किसी का कोई वश नहीं चलता, क्योंकि सारी बागडोर तो तेरे ही हाथ में है। हे वाहिगुरु! जीवों को तू स्वयं ही अपने से दूर करता है और स्वयं ही अपने में मिलाता है।

तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥

हे वाहिगुरु! मानो तू जिंदगी का एक गहरा सागर है, सारे जीव मानो उस सागर की लहरें हैं। तेरे जैसा, तेरे बिना और कोई नहीं है। भाई जोगिंदर सिंघ तलवाड़ा जी ने उपरोक्त पंक्ति का अर्थ इस प्रकार किया है : "तू चेतना का विशाल प्रवाह है, सारी प्रकृति तेरे में ही समाई हुई है। तेरे बिना दूसरा कोई है ही नहीं।"

जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ फोन ०१४१-२६५०३७०*

विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥

ये समस्त प्राणी (जीव-जंतु) तेरा रचा हुआ तमाशा (खेल) हैं। जिनकी तकदीर में तुझसे वियोग (बिछुड़ना) ही लिखा है वे मनुष्य-जन्म पाकर भी तुझसे बिछुड़े हुए हैं अर्थात् तेरे सिमरन से वंचित रह कर सदा तुझसे दूर हैं और हर पल कष्टों में घिरे हुए हैं। तेरी ही रजा में संयोग के लेख द्वारा पुनः तेरे नाम से तेरा मिलाप हासिल कर लेते हैं, जैसा कि जपु जी साहिब की बाणी में श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ *(पन्ना ६)*

अर्थात् ईश्वर द्वारा लिखे भाग्यानुसार जीवों के अपने-अपने हिस्से मिलाप का सुख तथा बिछोड़े का दुख आता है। यह सब कुछ उसी परमेश्वर के बनाये अट्टल नियमों के अनुसार ही हो रहा है।

जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥
हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥

हे परमेश्वर! जिस जीव को तू स्वयं समझने की सामर्थ्य बख्शता है वही मनुष्य जीवन-मार्ग को समझता है। जिसे तेरी रहमत से जीवन-युक्ति समझ आ जाती है वही सदैव तेरा यशोगान करता हुआ दूसरों को भी तेरे गुणों का गीत सुनाता है। वस्तुतः तेरी रहमत सदका ही जीव हर पल तेरी सिफत-सलाह में लीन रहता है।

जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥

हे भाई! जिस किसी ने भी तेरा नाम जपा है उसी ने आत्मिक सुख प्राप्त किये हैं। ऐसा मनुष्य सहजता से आत्मिक अडोलता प्राप्त कर प्रभु के नाम में लीन हो जाता है अर्थात् सहज स्वभाव वह ईश्वर में ही समा जाता है।

तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥

हे ईश्वर! तू स्वयं ही सब कुछ का निर्माता अर्थात् सबको पैदा करने वाला तू ही है। सब कुछ तेरे द्वारा ही होना सम्भव है। तेरे बिना तेरे जैसा और कोई भी नहीं है।

तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥

हे प्रभु! जीवों को पैदा करके उनकी सार-सम्भाल भी तू ही करता है अर्थात् उनकी परवरिश की जिम्मेवारी भी तेरी ही है। श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं कि जो मनुष्य गुरु की शरण आता है उसके अंदर परमेश्वर प्रकट हो जाता है। गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलने वाले मनुष्य के अन्तःकरण में ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध हो जाता है। इस प्रकार उसे स्वयं में तथा प्रत्येक जीव में यहां तक कि प्रकृति के कण-कण में समाया हुआ वह प्रभु दिखाई देता है।

आसा महला १ ॥

तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥
पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥

आसा राग में उच्चारण किया गया पहले पातशाह धन्य-धन्य श्री गुरु नानक देव जी का यह पावन शबद है। गुरु पातशाह का पावन फरमान है, हे भाई! इस अजीबो-गरीब (भयानक संसार रूपी सरोवर) में हम जीवों का निवास है जिस भवजल में ईश्वर ने स्वयं ही तृष्णा अग्नि रूपी जल पैदा किया है। बाबा काहन सिंघ जी 'सेवा-पंथी' ने इस पंक्ति का अर्थ इस प्रकार किया है--"जिसमें प्रभु ने खुद ही पदार्थों

का पानी और उसमें तृष्णा की आग पैदा की हुई है।" इस भयानक सरोवर में मोह-ममता का कीचड़ है। अत: इस मोह रूपी दलदल में एक कदम भी आगे बढ़ाना मुश्किल है। वस्तुत: पारिवारिक एवं पदार्थों के मोह में फंसा हुआ जीव आध्यात्मिक मार्ग पर एक भी कदम आगे चलने में सक्षम नहीं है। गुरु पातशाह जी का पावन फरमान है कि मैंने देखा है कि इस सांसारिक मोह रूपी कीचड़ में धंस कर अनेक जीव गर्क हो गये हैं अर्थात् अपना आत्मिक जीवन बर्बाद कर चुके हैं।

मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥रहाउ॥

हे मन! हे मूर्ख मन! एक अकाल पुरख का सिमरन नहीं करता तथा ईश्वर को भुलाने से तेरे अंदर से आत्मिक गुण धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे हैं। अत: मन को संबोधित करते हुए पातशाह पावन उपदेश करते हैं कि स्मरण रहे कि प्रभु-पिता को भुला कर तेरे मानवीय गुण गल कर धीरे-धीरे तबाह होते जा रहे हैं।

ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥
प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥२॥३॥

हे परमेश्वर! न तो मैं जती अर्थात् पवित्र आचरण वाला हूं, न ही सती अर्थात् सत्याचरण वाला (सत्य को धारण करने वाला) हूं। न ही मैं पढ़ा-लिखा पंडित विद्वान हूं। मैं तो मूर्ख-गवार हूं। इसी मूढ़ता में ही मेरा अमूल्य जीवन बर्बाद हो रहा है। अत: गुरु नानक देव जी महाराज विनम्रता सहित विनती करते हैं कि हे वाहिगुरु! मुझे उनकी शरण में रखो जिनके हृदय से तू कदाचित विस्मृत नहीं होता अर्थात् जिन्हें तू पल भर के लिए भी नहीं भूलता। अत: मुझे केवल उनकी शरण नसीब हो जिन्हें प्रभु सास-ग्रास नहीं भूलता।

प्रस्तुत शबद में गुरु साहिब का पावन उपदेश है कि इस संसार रूपी सागर में पदार्थ पानी की तरह हैं तथा पांच विकारों की लहरें अग्नि सदृश्य हैं। मोह की दलदल में फंसा हुआ इंसान आत्मिक प्रगति करने में असमर्थ है। प्रभु का सिमरन, जो सर्वश्रेष्ठ धन है, वह पूर्ण गुरु अथवा सतसंगत से ही प्राप्त हो सकता है। गुरबाणी आशयानुसार भाग्यशाली हैं वे लोग जिन्हें वाहिगुरु की रहमत सदका सिमरन की बख्शिश प्राप्त होती है, यथा :

सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥
नानक जन की मंगै रवाला ॥ (पन्ना २६३)

कविता

मंजिल मिलने वाली है

*-माता प्रसाद शुक्ल**

गई उदासी, खुशी की लाली है,
वाहिगुरु की रहमत पा ली है।
यही सोचता रहा मैं रात भर,
उसने क्यों मिरी बात टाली है?
ऐसा खजाना पा गया है वो,
किसी के आगे न सवाली है।
उसको तख्त-ओ-ताज मिले हैं,
रब की रमज़ चित्त में बसा ली है।
सोचने भर से कुछ नहीं हासिल,
चलकर ही मंजिल मिलने वाली है।

**संपादक-साहित्यकार, दूरभाष निर्देशिका, शिन्दे की छावनी, लश्कर, ग्वालियर-०९ मो: ०९३००१४७६७०*

गुरु-गाथा : १६

नूर बन गई नूरशाह

*-डॉ अमृत कौर**

नूरशाह नाम की जादूगरनी आसाम में रहती थी। वह अत्यन्त सुन्दर थी। यौवन के मद में मदमस्त हुस्न की मल्लिका नूरशाह सचमुच नूर थी। हुस्न के जादू से जगमगाती हुई वह शाही ठाठ-बाठ से रहती थी। धन की कोई कमी नहीं थी। अनेकों सखियों से घिरी रानी लगती थी। उसे अपने सौन्दर्य पर गर्व था और सौन्दर्य के इस अभिमान ने उसे जादूगरनी बना दिया। नूरशाह नामक फकीर से तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोने की विद्या सीख, अपने हुस्न के जादू और त्राटक विद्या में सिद्धि के द्वारा उसने मर्दों को अपने फंदे में फंसाने का शौक पाल लिया था। अनेक जपी-तपी उसके बंदीगृह में कैद थे। चारों ओर उसका भय और आतंक था। उसके दूत-दूतनियां उसका यश गाकर लोगों को उसके माया-जाल में फंसाते। लोग उसके पास मुरादें पूरी करने आते। वह धागे, ताबीज, राख़ आदि मन्त्रित करके देती। चारों ओर उसका डंका बजता था, यशगान होता था,--"धन्य नूरशाह नूरन! धन्य तेरी सरकार है। धन्य है तू, धन्य रानी, धन्य तेरा दरबार है!"

गुरु नानक साहिब जी जब आसाम पहुंचे तो उन्होंने नूरशाह के इस मायानगरी के इन्द्रजाल से अपनी त्राटक-विद्या द्वारा लोगों को अपने फंदे में फंसाने के बारे में सुना। उन्होंने अपने साथी भाई मरदाना जी को उसके ठिकाने का पता लगाने के लिए भेजा, परन्तु जब भाई मरदाना जी उसकी हवेली के समीप पहुंचे तो उसकी शाही शानो-शौकत को देखकर मन्त्र-मुग्ध हो गए। वे उसकी मोहिनी मूरत, जंत्र-मंत्र और त्राटक-विद्या का शिकार हो गये। उसने कहा, "मरदाना, तुम मनुष्य नहीं भेड़ हो।" तो भाई मरदाना जी मैं-मैं कर के मिमियाने लगे। जैसे चुंबक से लोहा आकर्षित होता है वैसे भाई मरदाना जी उसके पीछे-पीछे गुलाम बने घूमते हैं, उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। वह मिर्चें खिलाकर कहती है कि छुहारे हैं तो भाई जी कहते हैं कि बहुत मीठे हैं। छुहारों को कहती है कि कड़वे हैं तो भाई जी थू-थू करते हैं। भांति-भांति के व्यंजनों से उसकी सेवा होने लगी। उसकी इस सेवा से प्रसन्न होकर भाई मरदाना जी यह भूल गये कि वे गुरु जी द्वारा किस उद्देश्य से भेजे गये हैं। काफी समय बीत जाने पर भी जब भाई मरदाना जी वापिस नहीं लौटे तो गुरु जी समझ गए कि भाई मरदाना जी नूरशाह के जाल में फंस गये हैं और गुरु जी चल पड़े नूरशाह का उद्धार करने।

जब गुरु जी नूरशाह के ठिकाने पर पहुंचे तो उन्होंने भाई मरदाना जी को नूरशाह और उसकी सखियों द्वारा घिरा हुआ पाया। अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से उनकी सेवा होती देखी। "सति करतार" की ध्वनि से वातावरण गूंज उठा। नूरशाह ने देखा कि आंगन में एक महान ओजस्वी मूरत अचल चट्टान की भांति खड़ी है। नयनों में एक अद्भुत ज्योति है जिसके देखते ही उसके नयन झुक गए। उसके जीवन में यह प्रथम अवसर था कि उस त्राटक स्त्री ने अपने आप को गुरु जी की ओर देखने में असमर्थ पा दृष्टि झुका ली। गुरु जी को देखते ही नूरशाह भौचक्की-सी रह गई। उनके तेजस्वी चेहरे की आभा से अभिभूत हुई वह उन्हें टिकटिकी लगाकर देखती ही रह गई। इस प्रकार की दिव्य आभा से आलोकित, दैवी नूर से

**१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३*

चमकता तेजस्वी चेहरा उसने कभी नहीं देखा था। वह गुरु जी के आलौकिक सौन्दर्य पर मोहित होकर अपनी मोहक अदाओं और तन्त्र-मन्त्र की विद्या के द्वारा उन्हें वश में करने का प्रयास करने लगी। माणिक-मोतियों के थाल गुरु जी को भेंट करने का प्रयास किया गया। अनेक प्रकार के व्यंजन परोसे गए। बालक-बालिकाओं ने गीत गाकर गुरु जी का स्वागत किया। गुरु जी उसकी इन अदाओं को देख कर मुस्करा पड़े। इस दैवी मुस्कान से उनका चेहरा और भी चमकने लगा। उसने दैवी मस्ती से मदमस्त गुरु जी के नेत्रों में झांका और मोहित हो गई। उन नेत्रों में एक अनोखा जादू था, आलौकिक हुस्न का जादू। वह अपने आप को भूल गई। एक अजीब-सी सिहरन उसके शरीर में हुई। गुरु जी ने अपना वरद हाथ उसके सिर पर फेरा। गुरु जी के दैवी स्पर्श से उसका रोम-रोम रोमांचित हो गया। सुखदायक विचार-तरंगें उसके शरीर में प्रवेश करने लगीं। उसका मन असीम शांति का अनुभव करने लगा, दुर्भावनाएं मिटने लगीं। वह गुरु-चरणों में झुकी। गुरु जी ने आशीष देते हुए कहा, "मेरी बच्ची! कहां भटक रही हो? यह उचित मार्ग नहीं है। प्रभु ने तुम्हें सौन्दर्य की सम्पदा प्रदान की है। इस सौन्दर्य को दैवी गुणों की आभा से आलोकित कर दैवी हुस्न में परिवर्तित कर दो। संयम और शालीनता नारी के आभूषण हैं। अपनी सुन्दरता को आलौकिक सुंदरता में परिवर्तित कर संसार की आभा को बढ़ाओ। तंत्र-मंत्र के इस जाल में से निकलो। इसमें भटकाव के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। बन्दीगृह में पड़े बेगुनाहों को मुक्त कर दो। दूसरों को दास्तां के बंधनों में डालना अपनी आत्मा को बंदी बनाना है। तुम राग-विद्या में निपुण हो। प्रभु-भक्ति के गीत गाओ। स्वयं भी आनंद की अनुभूति करो और दूसरों को भी शबदों का रस प्रदान करो।"

गुरु जी ने स्त्री जीवन के लक्ष्य और गुणों को चित्रित करते इस शबद का गायन किया :

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुंणी ॥
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥
(पन्ना १७-१८)

मधुर दैवी संगीत झंकृत हुआ। ईश्वरीय अनुकरण की एक फुहार बरसी। गुरु जी की मधुर सुरीली आवाज और भाई मरदाना जी की रबाब ने जादू का काम किया। इस शबद ने वातावरण को आध्यात्मिक रंग में रंग दिया। नूरशाह को स्त्री जीवन के उचित लक्ष्य की अनुभूति हुई। उसे अंदर छिपी शक्तियों का अहसास हुआ। नूरशाह नूरो-नूर हो गई। उसने सही मार्ग अपनाने का निर्णय किया। उसके जीवन में शान्ति का संचार हुआ। जादू का मीनार गिर गया। उसका घर 'हरि का घर' बन गया। उसने 'सति नामु' का आंचल पकड़ लिया। दिन-रात कीर्तन होने लगा। धन-दौलत परोपकार में लगा दी। लंगर का प्रवाह चल पड़ा। बंदीगृह से सभी बंदियों को मुक्त कर दिया जो सम्पूर्ण देश के लिए 'सति नामु' का संदेश लेकर निकल पड़े। दूसरों को बंदी बनाने वाली नूर आत्मा की स्वतन्त्रता की संदेशवाहिका बन गई।

आज उसके घर में ऐसे साजन आए थे जिन्होंने सत्य प्रभु से उसका मिलाप करा दिया था, जीवन के सही मार्ग पर अग्रसर करा दिया था:

--हम घरि साजन आए ॥
साचै मेलि मिलाए ॥ *(पन्ना ७६४)*

"गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥" (पन्ना २) उसके जीवन का लक्ष्य बन गया। कुछ दिन गुरु जी उसके पास रहे। जब वह नाम में परिपक्व हुई तो चलने लगे। नूरशाह ने उनके स्मृति-चिन्ह के रूप में उनसे कोई यादगार मांगी। गुरु जी के हाथ में बरछा था। वह बरछा उन्होंने नूरशाह को भेंट-स्वरूप दे दिया। यह बरछा अब तक नूरशाह के स्थान पर है और संगत को उसके दर्शन कराए जाते हैं।

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-२७

संस्कृत के विशद् विद्वान- कवि ईश्वर दास

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के दरबार में विद्वानों, कवि-कोविद, साहित्यकारों और भाषा विशारदों का बड़ा ही सम्मान था। इस सम्मान की चर्चा भी दूर-दूर तक फैली हुई थी। इसलिए लगभग सारे उत्तर एवं मध्य-पश्चिम भारत के कवि-विद्वान दशमेश पिता के दरबार में आने और दरबार में सुशोभित विद्वान्-मंडल का अंग बनने के लिए हृदय से लालायित रहते थे। ऐसे दूर-दराज के कवि जब गुरु-दरबार में उपस्थित होते तो उनकी प्रतिभा और विद्वता का भरपूर सम्मान किया जाता, उन्हें वृत्ति दी जाती, उन्हें दरबार में श्रेष्ठ पद देकर निवाजा जाता। यही कारण है कि दशमेश पिता के दरबारी कवियों में अनेक ऐसे थे जो काफी दूर से गुरु-दरबार की महिमा सुनकर अनंदपुर साहिब आये हुए थे।

ऐसे कवियों-विद्वानों में एक महत्वपूर्ण नाम है--कवि ईश्वर दास। कई सिक्ख स्रोत ग्रंथों में उच्चारण भेद हो जाने के कारण इनका नाम कई स्थानों पर 'ईशरदास' भी दर्ज किया गया है। कवि ईश्वर दास उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध शहर 'आगरा' के रहने वाले थे। इनके बारे में स्पष्टतया बताया गया है कि ये 'सक्सेना' थे और 'कायस्थ' बिरादरी से सम्बंध रखते थे। 'सक्सेना' बिरादरी आज भी पूर्वी और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बहुतायत से निवास करती है। बहुत साफ-सी बात है कि कवि ईश्वर दास सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों (१६८०-१७०० ई.) में दशमेश पिता के विद्या-दरबार की शोभा सुनकर अनंदपुर साहिब आये और फिर वहीं के बन कर रह गये। हिंदी के कई संदर्भ ग्रंथों एवं प्राचीन इतिहासों में भी कवि ईश्वर दास का उपर्युक्त विवरण उपलब्ध है।

कवि ईश्वर दास की जो रचनायें उपलब्ध हैं उनके आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कवि संस्कृत एवं ज्योतिष के विद्वान थे।

गुरु जी ने महाभारत, रामायण समेत अनेक संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद-कार्य करवाया था। कवि ईश्वर दास का जिक्र भी इन अनुवादक विद्वानों में आता है। आप ने महाभारत के 'स्वर्गारोहण पर्व' का अनुवाद किया। इसके अलावा कवि की एक और पुस्तक 'गृहफल विचार' भी मिलती है, जिस पर रचना-काल संवत् १७५६ बिक्रमी (मुताबिक १६९९ ई.) लिखा गया है। कवि ने इसमें यह भी लिखा है कि उसने इस ग्रंथ की रचना 'गोपाचल' नामक स्थान पर रहकर की है। 'गोपाचल' संभवत: आगरा या ग्वालियर को कहा गया है। इस संदर्भ से यह भी साबित होता है कि कवि ईश्वर दास का आगरा, ग्वालियर, अनंदपुर साहिब आदि स्थानों पर निरंतर आना-जाना था।

इस प्रकार दशमेश पिता के दरबारी कवियों-विद्वानों में कवि ईश्वर दास का नाम एक प्रकांड संस्कृत विद्वान् के रूप में सुशोभित है।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१*

जत्थेदार अवतार सिंघ ने 'सारागढ़ी निवास' का नींव-पत्थर रखा

अमृतसर : १६ अक्तूबर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने स्थानीय गुरुद्वारा सारागढ़ी साहिब में अरदास उपरांत ६ मंजिला (पांच-मंजिला+बेसमेंट) 'सारागढ़ी निवास' का नींव-पत्थर रखा। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि देश-विदेशें से सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के दर्शनों के लिए आने वाली संगत के रैन-बसेरे के लिए आधुनिकतम सुविधाओं वाली सराय 'सारागढ़ी निवास' के नाम पर तैयार की जा रही है। उन्होंने बताया कि इस सराय में बाथरूम अटैच १०२ कमरों के अतिरिक्त १७ डोर मैटरी (बड़े कमरे), एक मल्टीपर्पज़ हाल, लाइब्रेरी हाल, कैफेटेरिया और लिट्रेचर हाल के अतिरिक्त बेसमेंट में २५० के लगभग कारें खड़ी किये जाने की क्षमता वाली कार पार्किंग भी तैयार की जाएगी और उन्होंने बताया कि सराय की टॉप पर टैरेस गार्डन तैयार किया जाएगा तथा नवीनतम सुविधाओं वाली उत्तरी भारत में ऐसी प्रथम सराय होगी। उन्होंने बताया कि इस सराय का डिजाइन 'रविन्द्र एण्ड ऐसोसिएटस' अमृतसर की तरफ से तैयार किया गया है। इससे पूर्व 'अनंदु साहिब' के पाठ उपरांत श्री हरिमंदर साहिब के अरदासिये भाई धरम सिंघ ने अरदास की।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यगण के अतिरिक्त शिरोमणि कमेटी के सचिव साहिबान तथा बड़ी संख्या में स्टाफ उपस्थित था।

डॉ. जौली की सिक्ख धर्म तथा साहित्य के प्रति सेवाओं को सदैव याद रखा जाएगा : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर : १४ अक्तूबर। डॉ. जतिंदरपाल सिंघ जौली, जो गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर के पंजाबी विभाग में रीडर की हैसीयत से प्रशंसनीय सेवायें निभा रहे थे, गत दिनों अजीत नगर, अमृतसर में घटित एक सड़क दुर्घटना के उपरांत कुछ दिन अस्पताल जेरे-उपचार रह कर परलोक गमन कर गए। डॉ. जतिंदरपाल सिंघ जौली के विद्वता भरपूर आलेख शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धार्मिक पंजाबी मासिक पत्रिका 'गुरमति प्रकाश' और अन्य पत्रिकाओं में प्राय: प्रकाशित होते रहते थे।

शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने डॉ. जौली के देहांत पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. जौली ने सिक्ख धर्म तथा साहित्य-जगत में अपनी लिखित रचनाओं द्वारा जो योगदान डाला है उसे हमेशा याद रखा जाएगा।

जत्थेदार अवतार सिंघ की तरफ से ज्ञानी हरिंदर सिंघ के निधन पर दुख व्यक्त

अमृतसर : २९ अक्तूबर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ

ने केंद्रीय सिंघ सभा के प्रधान तथा यू. पी. सिक्ख प्रतिनिधि बोर्ड के भूतपूर्व प्रधान ज्ञानी हरिंदर सिंघ के निधन पर उनके परिवार के साथ दुख व्यक्त किया है।

यहां से जारी शोक संदेश में उन्होंने कहा कि पंथ-प्रस्त ज्ञानी हरिंदर सिंघ बहुत ही मिलनसार तथा नेकदिल इंसान थे। वे लंबा समय सिंघ सभा लहर तथा पंथक गतिविधियों के साथ जुड़े रहे। उनके निधन से सिक्ख पंथ को भरपाई न हो सकने वाली क्षति हुई है। जत्थेदार अवतार सिंघ ने अकाल पुरख के चरणों में अरदास की कि वे बिछुड़ी आत्मा को अपने चरणों में निवास बख्शें और पीछे परिवार, सगे-संबंधियों और मित्रों-शुभचिंतकों को भाणा मानने का बल प्रदान करें।

विदेशों में निवास करने वाले सिक्ख पंथ-विरोधी शक्तियों से सुचेत रहें : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर : ९ नवंबर। गत दिनों इंग्लैंड के दौरे पर गए जत्थेदार अवतार सिंघ ने गुरुद्वारा सिंघ सभा वारकिंग, गुरुद्वारा सिंघ सभा, हैवलक रोड, साऊथ हाल, गुरुद्वारा सिंघ सभा, पार्क वीऊ साऊथ हाल और गुरुद्वारा सिंघ सभा सलोह में हुए विभिन्न समागमों के समय संगत की भारी एकत्रता को संबोधन करते हुए शिरोमणि कमेटी के कार्यों के बारे में जानकारी दी।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि सिक्ख कौम की केंद्रीय शक्ति श्री अकाल तख्त साहिब एवं सचखंड श्री हरिमंदर साहिब शक्ति का स्रोत हैं और इसके साथ राजनैतिक शक्ति शिरोमणि अकाली दल है। इन शक्तियों में से कोई शक्ति दुर्बल होती है तो सिक्खों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, इसलिए इनको पूर्ण सहयोग देना चाहिए। पंथ-विरोधी सदैव इन शक्तियों को दुर्बल करने के प्रयत्न में लगे रहते हैं। इसलिए सिक्ख संगत को इनसे सुचेत होकर इनको पराजित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इन शक्तियों का निशाना सदैव हमारी पंथक संस्थाएं ही होती हैं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि विद्या के पक्ष से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने डायरेक्टोरेट ऑफ एजूकेशन स्थापित करते हुए उच्च कोटि के स्कूल, २ इंजीनियरिंग कॉलेज, २ पोलीटैक्निक कॉलेज, ४ बी. एड. कॉलेज, २ मैडीकल कॉलेज और श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनीवर्सिटी जुलाई २०१० से आरंभ की जा रही है। इसका सात-मंजिला ब्लाक बन चुका है।

उन्होंने कहा कि हाल ही में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से जरूरतमंद और ऊंची मैरिट वाले सिक्ख विद्यार्थियों को यू. के. की यूनीवर्सिटी ऑफ कैंब्रिज में अलग-अलग विषयों में पी. एच. डी. और एम. फिल. के कोर्स करने के लिए स्कालरशिप प्रदान करने हेतु एक ऐतिहासिक संधि पर हस्ताक्षर किये हैं।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१२-२००८